व रफ़अना लका ज़िकरक

जब बात रफ़अतों की होती है औज और बुलंदियों की होती है तो क़ूवते फ़िक्रो शऊरे इन्सानी किसी नुकतए आग़ाज़ से किसी इनतेहा या मेअयारे बलंदी की तलाश में सफ़र करने लगती हैं। लेकिन इस्तेअदाद ज़र्फ के लिहाज़ से परवाज़े फ़िक्र के बाज़ू व पर साथ देते हैं और जिस के बाद इन के पंख टूट टूट कर गिरने लगते हैं और फिर एक जुम्बिशे ख़फ़ी के सेवा ताक़ते परवाज़ में कुछ बाक़ी नही रहता मगर कोई उन्सुर बाक़ी रह जाता है तो वोह हैरतो इस्तेअजाब का है। बलंदियाँ सिमटती हैं तो किसी अंजाने नुकतए मर्कज़ी का तसव्वुर देती हैं और फैलती हैं तो तमाम शै पर छा जाती हैं जो अल्लाह तबारको तआला की क़ुदरते कामेला के यक़ीन की वादियों को पुर नूर कर देती हैं जहाँ इन्सान अपनी बिसात भर फ़िक्रो नज़र को महमेज़ करता है और बारगाहे खुदावंदी में हाथ उठा कर कहता है:

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलोका बेरहमतेकल्लती वसेअत कुल्ला शै

ऐ मेरे अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ तेरी उस रहमत का वास्ता दे कर जो तमाम शै पर छाई हुई है।

वोह ख़ालिक़े काएनाते आलम जो असमउससामेईन है और अबसरननाज़ेरीन है जिस की हम्द व सना में हबीबे एलाहलआलमीन मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम न इरशाद फ़र्माया:

अल्लाहुम्मा इन्नका तरा व ला तोरा व अन्ता बिल मुनज़रिल अअला व अन्ना इलैकलमुंतहा वर्रुज्आ.

ऐ तबारका व तआला तू वोह है जो सब को देख रहा है और तू वोह है जिसे कोई नहीं देख सकता. और तेरी ज़ात बहुत बलंद व बाला है और आख़िर में बेशक सब तेरी तरफ़ पलट कर जाएँगे.

ज़बाने वही से निकले हुए येह जुम्ले बता रहे हैं कि उसकी ज़ात इतनी बलंद व बाला है कि इंसान की फ़िक्री परवाज़ उसके मुक़ाबले में बहुत पस्त है.चुनांचे हर पस्त व बाला पर उसकी नज़र है वोह काएनात के ज़र्रे ज़र्रे पर नज़र रखता है और किसी मख़लूक़ में उसके देखने की ताक़त नहीं है.

ख़ुदा वंद मुतआल ने इंसान को अक़्ल जैसी नेअमत से नवाज़ा और उसकी गहराइयों में अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने के लिए एक नूर की शाम फरोज़ाँ कर दी और उसकी हिफ़ाज़त के लिये अम्बिया और औसिया की हिदायत को उसका फ़ानूस क़रार दिया.इतने एहतेमाम के बाद इंसान को इस अर्ज़े ख़ाक़ी पर उसकी बिसात भर असबाबे रिज़्क़ मुहय्या फ़र्मा कर उसे ख़ुद मुख़तारी अता फ़र्माई और फिर फ़र्माया अब ऐ इंसान तू चाहे तो शुक्र गुज़ारों की सफ़ में चला जाए और चाहे तो मुनकिरों की गर्दन फ़राज़ी अपना मक़सदे हयात बना लें।

येह एक बरहना हक़ीक़त है कि हर शै अपने मर्कज़ की तरफ़ पलटती है.जिसके लिये साहेबे वही ने इरशाद फ़र्माया है कि ऐ अल्लाह तआला! हर शै की वापसी तेरी ही तरफ़ ख़त्म होगी। व अन्न इलैकल मुंतहा वर्रुज्आ। इस जुम्ले में शाकिर व काफ़िर दोनों की वापसी का ज़िक्र है।

इस मुक़द्देमा के तहत ज़रा दुनिया की तरफ़ इरतेकाई मनाज़िल पर ग़ौरो फ़िक्र करिए जो अक़्लो ख़ेरद को हैरतो इस्तेअजाब की फ़ज़ा में क़लाबाज़ी का एक तसव्वुर दे रही है। और उस महवर पर रक़्साँ करती हैं जहाँ मग़रूर इंसान कह रहा है देख अब क्या हूँ और अब क्या हूँ और अब क्या हूँ, मैं? उस ''मैं (अना) ने उसे इतना मदहोश कर दिया कि वोह तख़रीब में इतना आगे बढ़ चुका है कि वोह वक़्त दूर नहीं जब हयात के रेशों से आग के शोले उठने लगेंगे।

बाकी सफह न. ३५ पर

इन्तेज़ार के आसार-ओ-बरकात और उसके लवाज़िम

इंतेज़ार एक ऐसा लफ़्ज़ है जिसके मआनी-ओ-मतालिब इंसान के वजूद पर छाऐ हुए हैं। इंसान अपने इन्फेरादी हालात में, जो तग़य्युर पर मुन्हसिर हैं येह देखता है कि हर हाल में इंतेज़ार का मोहताज है। एक साँस जो बाहर जाती है दूसरी साँस को अंदर लाने के लिये इंतेज़ार का एक वक़्फ़ा रखती है। ये साँसों की आमदो रफ़्त पर ग़ौर कीजिये तो अंदाज़ा होता है कि इन दोनों साँसों के दरमियानी वक़्फऐ इंतेज़ार के अगर मुतवाज़िन होने में ख़लल पड़ जाए तो बीमारी मोहलक बन कर वजूदे इंसानी में दाख़िल हो जाती है।

साँसों की बुनियाद पर इंसान की ज़िंदगी का दारो मदार है और साँसों का इन्हेसार बर बेनाऐ इंतेज़ारे अन्फ़ास के तवाज़ुन पर है। इस उसूल के तहेत इंसान का वजूद दो अ़नासिर का लाज़ेमा है, एक साँस की आमदो रफ़्त और दूसरे इंतेज़ार, दरमियाने अमदो रफ़्त।

अक़्ल और इंतेज़ार

इंसान का वजूद अ़क़्ल की बुनियाद पर अशरफ़ीयत का हामिल है और इंतेज़ार हमेशा उसके साथ साथ उसका मुआविन रहता है, अ़क़्ले इंसानी बतौर तदरीज नुमू पाकर इरतेक़ा की मंज़िलों को तय करती है। येह दरजाती इरतेक़ा अपने दामन में कैफ़ीयात के इब्तेदाई मरहले में सजाती है, संवारती है, हुस्न देती है और क़ुब्ह से उसको पाक करती है। जैसे एक माँ अपने बच्चे को इब्तेदाई उम्र में परवरिश करते वक़्त काम करती है और फिर इंतेज़ार करती है उस नतीजे का कि अब येह अअ़ला मंज़िल की तरफ़ जा सकती है।

इस तरह इन्सान रूहानियत की बालीदगी का विजदान करता है। और जैसे जैसे वोह दराज़िये उम्र को तय करता है उसकी अ़क़्ल की रोशनी बढ़ती है उसमें परवाज़ की

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

सीरियल नम्बर	मज़मून	सफ़हा नम्बर
१.	व रफ़अना लका ज़िकरक	१
२.	इन्तेज़ार के आसार-ओ-बरकात और उसके लवाज़िम	२
३.	शर्हे ज़ियारते इमामे ज़माना (अ.त.फ.श.) बरोज़ जुम्आ	८
४.	किताबुल ग़ैबा यासिरे आले मोहम्मद (अलैहिमुस्सलाम)	१५
५.	अक़ीदए इमाम महदी (अ.स.) और अ़ोलमाए अह्ले सुन्नत	२२
६.	शैख़ मुर्तज़ा अन्सारी (र.अ.) और इमामे ज़माना (अ.स.)	२६
७.	फ़ज़ाएल-ओ-औसाफ़े असहाबे इमाम महदी (अलैहिस्सलाम)	३०

ताक़त आती है और वोह माद्दी लेहाज़ से तो अफ़रादे दीगर के साथ होता है लेकिन वोह बातिनी तौर पर एक बलंद दर्जे पर फ़ाएज़ होता है जहाँ से दुनिया दार और कम सेवाद इंसान की ख़राबियों को देखता है। और ख़ुद में और उन में एक फ़र्क़ महसूस करता है।

येह इरतेक़ाऐ रूहानियात तदरीजी होता है, अवाएल के मराहिल होते हैं। फिर इल्मो तक़वे के सहारे वोह एक अलग काएनात को अपने गिरदो पेश देखता है। उसकी काएनात की वुसअतें बढ़ती रहती हैं बशर्ते कि हिदायत रास्त हो। चारों तरफ़ का समाजी माहौल उसकी परहेज़गारी में उसके पीछे न पड़ जाए और उसकी अअला मंज़िल तक पहुँचने के ज़ीनों से क़दम को नीचे से पकड़ कर खींचने की तहरीक न चलाने लगे। और ऐसा ही कसरत से होता है, वरना अबूज़र को एक सख़्त तरीन जिलावतनी के इम्तेहान से न गुज़रना पड़ता। और इमाम हुसैन (अ.स.) का तारीख़ी जुम्ला अदा न होता। ''चचा जो अग़नाम के पास है आपको उसकी हाजत नहीं और जो आप के पास है वोह उन्हे नसीब नहीं'' (यानी इंतेज़ार कीजिये)।

इस कशमकशे हयात में मुसतहकम और मुसतहसन इंतेज़ार,जाहिल और कम ज़र्फ़ अफ़राद पर मुशतमिल अंबोह के शोरो ग़ोग़ा को दबा देता है और शैतान की तमाम फ़ुसूँ साज़ियों, फ़रेब कारियों और फ़ितना परदाज़ियों के बिछाए इबलाग़ी जाल के सारे ताने बाने तोड़ कर फ़र्दे बा सेवाद की राह को रौशन और हमवार कर देता है। रफ़्ता रफ़्ता अशरफ़ीयत, जो बेनाए ख़िल्क़ते इंसान है, का नूर उसकी जबीन से ज़िया देने लगता है। उमर इब्ने उ़बैद ने आख़िर हैरत ज़दा होकर हिशाम से पूछ ही लिया, तुम हिशाम बिन हकम तो नहीं हो? अबू बसीर जो नाबीना थे, जब उनसे पूछने वाले ने सवाल किया - ''क्या आपने इमाम सादिक़ (अ.स.) को देखा है?'' तो आपने जवाब दिया। ''क्या मुमकिन है कि तुम जब मस्जिद के दर पर खड़े होकर सवाल कर रहे हो, उस वक़्त मेरा इमाम अपनी इ़बादत में मशग़ूल न हो।''

ऐसे अफ़राद जिनका ज़िक्र ऊपर किया गया है वोह ज़ाहिरन हमारे साथ होते हैं, हमारी तरह उनका रहन-सहन होता है, हमारी तरह उनकी बात-चीत होती है, ग़र्ज़ेकि रफ़्तार व गुफ़्तार, नशिस्त व बर्ख़ास्त हमारे ही अंदाज़ व तर्ज़ के होते हैं। लेकिन उनकी अ़क़्लें बहुत ज़्यादा रौशन होती हैं। और वोह इंतेज़ार के मफ़ाहीम से आगाह होते हैं उनका एक अपना क़बीला भी होता है। वोह अपने वुजूद के अलग-अलग आसार व बरकात रखते हैं। जैसे अ़ली इब्ने महज़ियार, मुक़द्दसे अर्दबेली, सैयद इब्ने ताऊस और ऐसे अफ़राद की एक तवील फ़ेहरिस्त है।

इंतेज़ार और इरफ़ान

जब अरबों के चन्द अफ़राद एक जगह बैठे थे वहाँ हबीब इब्ने मज़ाहिर, रुशैद हुजरी और मीसमे तम्मार ने एक-दूसरे की शहादतों की अ़लामतों को इशारिया (Symbolic) अंदाज़ में बयान किया। तो सुननेवाले कहने लगे येह लोग सबसे बड़े झूठे हैं, यहाँ ठहरकर येह तीनों अफ़राद दावते फ़िक्र दे रहे हैं कि एक गिरोह सिबाते क़दमी और इंतेज़ार की बात करके छोटी सत्ह के लोगों को अपने क़बीले के अफ़राद की कामियाबी की सनद दे रहे थे। गोया समझा रहे थे, हम अपनी शहादत के मुन्तज़िर हैं। और वोह लोग वोह हैं जो सूदोज़ियाँ से बेख़बर अन्धेरे में भटक रहे हैं। गोया वोह कह रहे थे, बक़ौले अ़ल्लामा इक़बाल

''तू अपना रिज़्क़ ढूँढती है गर्दे राह में
मैं तो सेपहर भी नहीं लाता निगाह में।''

इंतेज़ार, इम्तेयाज़ी निशान है, अरज़ल और अशरफ़ के दरमियान

इंसान की ख़िल्क़त में अस्फ़ल की तरफ़ जाने की भी सलाहियत है और अश्रफ़ीयत के अअ़ला (आला) मक़ाम पर फ़ाएज़ होने की भी ताक़त है। परवाज़ करने की भी सलाहियत है। क़ुरआने मजीद ने इसके लिए सब्र की तल्क़ीन फ़र्माई और हक़ पर सिबाते क़दमी की हिदायत की है। हक़ पर सेबात क़दमी और सब्र की रूहेरवाँ

इंतेज़ार है। यमन की फ़त्ह के बाद सलमान फ़ारसी ने ज़ुहैर क़ैन को कर्बला में शहीद होने की ख़ुशख़बरी दी थी। लेकिन यमन की फ़त्ह में और कर्बला की जंग के दरमियान एक मुद्दत का फ़ासला है। हर क़दम पर इंतेज़ार का ज़ीना था जो बलंदी की तरफ़ वुजूदे ख़ाकी को लिये जा रहा था। इंतेज़ार के आसार व बरकात के बादल वहीं बरसते हैं जहाँ अश्रफ़ीयत की ज़रख़ेज़ी इस अब्रे बाराँ को अपनी तरफ़ खींचती है।

येह ज़रख़ेज़ी, येह नुमू, येह कूवते जाज़ेबा कैसे वुजूद में आए हैं इसके अस्बाब व इलल होते हैं और इसके लवाज़िम होते हैं जो कस्ब किए जाते हैं। जिसके लिए मेहनत व मशक़्क़त दरकार है। सब्र व तहम्मुल की ज़रुरत है। ईसार व क़ुर्बानी पर आमादा रहना पड़ता है। शबो रोज़ मुनाजात बारगाहे ख़ुदा वन्दी में करना पड़ता है। और परहेज़गारी के एख़्तियार करने में सऊबतें भी उठानी पड़ती हैं।

इंतेज़ार के लवाज़िम

ख़ुलासा येह है कि इंतेज़ार की पुर बहार दुनिया में और उसकी इत्र बीज़ फ़िज़ाओं में साँस लेने के लिए अपने वुजूद को, अपनी फ़िक्र को, अपने चलन को, तक़द्दुस के साँचे में ढालने के लिए इंसान को बहुत से लवाज़िम और शराएत के तहत जीना पड़ता है। हम उनमें से मिनजुम्ला लवाज़िमात के, कुछ का यहाँ ज़िक्र करेंगे। जब इंतेज़ार की बरकतों और उसके असरात के तआरुफ़ की एक नेहायत मुख़्तसर सी बात हो गई और इंसाफ़ पसंद ज़मीरे इंसानी उसे क़ुबूल कर रहा है तो येह देखना है कि पए सब्र व सुकून इंतेज़ार की हर वक़्त बेचैन और मुज़तरिब कैफ़ीयात को कैसे इलाज क़रार दिया जा सकता है। क़ुरआने करीम का इरशाद है कि 'वोह ख़ुदा वोह है जो क़ल्बे इंसानी पर सुकून नाज़िल करता है। अइम्मए मासूमीन अ़लैहिमुस्सलाम ने हमें उसकी राह दिखाई है। हमें उसकी तरबियत दी है। हमें उसका मिज़ाज आशना किया है। हमें उसके मदारिज तै करने के लिए एक नेसाबे तालीम और अ़मले पैहम की हिदायत की है और उसका इन्तेज़ाम हर ज़माने में बरक़रार रखा है। येह एहसान है हमारे अइम्मए मासूमीन अ़लैहिमुस्सलाम का जिन्होंने उसके लवाज़िम अ़ता फ़र्माए और मिसाली किरदार जिनका ज़िक्र पहले आ चुका है सीरत की आफ़ाक़ियत की सैर कराई और सुलूके मुन्तज़ेरान का सलीक़ा दिया है। चुनांचे हम आज चौदह सौ बरस से हज़ारों ज़ेर-ओ-बम, और यमबेयम तूफ़ान में घिरे होने के बावजूद अपने इमाम क़ाएम अ़लैहिस्सलाम की पनाहगाह में इत्मीनान और सुकून से जी लेते हैं और मौत से बेख़ौफ़ रहते हैं। हमारे लिए इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम मरकज़े इन्तेज़ार हैं। हमारे लिए आपके ज़ुहूर का तसव्वुर, मालूम नहीं कितने हसीन मनाज़िर के सिलसिले क़ाएम कर देता है। आइये देखें हम इन्तेज़ार के किन किन तालीमी और तरबीयती मराहिल से गुज़रें कि आप (अ़लैहिस्सलाम) के क़दमों की आहट सुनाई देने लगे और हम ताएरे लाहूती की हिम्मत और हौसले को भी पीछे छोड़ दें।

मरहला अव्वल

यादे इमामे ज़मान और मुताबिक़ ब पसन्दीदगीए इमाम अ़लैहिस्सलाम

यादों का तअ़ल्लुक़ माज़ी और हाल से होता है और किसी की पसन्द को अपनी पसन्द का मेअ़यार (मेयार) क़रार देना येह हाल से मुस्तक़्बिल की तरफ़ हरकत पज़ीर होना है।

याद

इमाम अ़लैहिस्सलाम को याद करना। ज़िन्दगी के कुछ औक़ात में कुछ जगहों पर कुछ लोगों के दरमियान, येह जानकर कि आप एक ऐसी ज़िन्दा हक़ीक़त हैं जिसको अल्लाह ने आसमानों की बलन्दियाँ, औज और वुसअ़तें इतनी ज़्यादा बख़्शी हैं कि आप की ज़ात को अपनी बरकात का मर्कज़ बनाकर इस अर्ज़े ख़ाकी पर अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़र्माया। और काएनात के लिए अपने तक़र्रुब का वसीला क़रार दिया। और एक तवील

मुद्दत की ग़ैबत अता फ़र्मा कर अपने बन्दगाने ख़ास के ईमान की परख के लिए एक निशान क़ाएम किया जो मन्ज़िल बमन्ज़िल ईमान की तहों के ज़्यादा होने का हिसाब देता है और उसका ज़िक्र क़ुरआने मजीद में इस तरह फ़र्माया:

और वोह (ख़ुदा) ईमान पर ईमान की तहों को ज़्यादा करता रहता है और ज़मीन और आसमान का लश्कर अल्लाह तआला के लिए है।

जब इस नूरे एलाही की तरफ़ दिल लहकने लगता है और उसकी याद में ताज़गी पैदा होती है तो इन्तेज़ारे ज़ुहूर की हमागीरियत के लिए क़दम आगे बढ़ने लगते हैं। हम माज़ी के तवील यादे सफ़र की बेचैनियों को मुस्तक़्बिले क़रीब में मन्ज़िले ज़ुहूर तक पहुँचने के लिए ख़ुद से कहते हैं ऐ काश मेरे पर होते और मैं उड़कर अपने मौला के क़दमों का बोसा लेता।

रफ़्ता-रफ़्ता ये लफ़्ज़ 'कुछ', दरमियान से हट जाता है। अब कुछ औक़ात नहीं बल्कि हमा वक़्त अब कुछ जगहों पर नहीं बल्कि हर जा। अब कुछ महफ़िलों में और इज्तेमाअ में नहीं, बल्कि हर मंज़िल, हर महफ़िल और हर मक़ाम पर पेशे नज़र हज़रते हुज्जत (अलैहिस्सलाम) होते हैं, इस इंतेज़ार के साथ कि अब ज़ुहूर हो जाए। अब आप आ जाएँ। अब आप कहाँ होंगे? आपके हमराह कौन होंगे? आपका रुख़ किस तरफ़ है? आप की उँगलियाँ किस तरफ़ इशारा कर रही हैं? फ़िर दिल कहता है, हो सकता है वोह मसीहा कहीं सरे बालीने मरीज़ होगा, कहीं हज पर गुमशुदा, कमज़ोर और चाहनेवाले की कुमक के लिए, अपने मुलाज़ेमीने ख़ास को तैनात कर रहा होगा। इस तरह याद के सिलसिले इन्तेज़ार के दोश बदोश ज़मज़मा बनकर एक चाहनेवाले की ज़बान पर आते रहते हैं।

ज़बान से येह कह देना बड़ा आसान है। बहुत अच्छा लगता है लेकिन ऐसी सूरत और सीरत को पैदा करना बहुत मुश्किल है। लेकिन हर मुश्किल आसान से आसानतर होती जाती है अगर तवज्जोह आप (अ.स.) की पसंद, आप (अ.स.) की ख़ुशनूदी, आप (अ.स.) की रिज़ा की तरफ़ रहे, और येह उस वक़्त मुमकिन है जब ख़ाहिशाते नफ़्सानी मरती है और अ़क़्ल जागती है।

(१) तर्के हुब्बे दुनिया

लोग दुनियादारी की मुहब्बत में मैलाने नफ़्स की पैरवी में ख़ाहिशात में ग़र्क़ रहने से, उन तकालीफ़े शरीआ से जो हम पर वाजिब की गई हैं, बेख़बर हो जाते हैं। उससे इतनी ग़फ़लत बरतने लगते हैं कि शरीअत की अहम्मीयत बाक़ी नहीं रहती। और इस तरह अ़क़्ल की हाकिमीयत ख़त्म हो जाती है। क्या ऐसे अफ़राद की मुश्किलें आसान हो सकती हैं? क्या वोह एक लम्हे के लिए भी सोच सकते हैं कि वोह इमामे ज़माना (अ.स.) की पसंद और आप (अ.स.) की ख़ुशनूदी का पास व लिहाज़ करने में एक़दाम कर सकते हैं?

कहाँ वोह ज़ाते पाक (अ.स.), जो वसीलए नजात है और कहाँ पस्त दुनिया के हुसूल की जद्दो-जेहद? आदमी कितना बड़ा और कितना क़द आवर हो जाता है, जब सदफ़े अ़क़्ल की रौशनी में और गिर्द व पेश के माहौल से आज़ाद होकर सिर्फ़ ग़ौर करता है और कहता है: ''ऐ काश! मैं मवालियाने इमामे ज़माना (अ.स.) में शामिल हो जाता। यहीं से मिट्टी नर्म होती है और फ़ितरते इंसानी की खेती में मुहब्बत की हरी-भरी फ़स्ल लहलहाने लगती है। चुनांचे रसूले ख़ुदा (स.अ.व.अ.) का इरशाद है:

अअ्बोदुन्नासो मन अक़ामलफ़राएज़।
आबिद तरीन इंसान वोह है जो वाजिबात पर अमल करता है।

(उसूले काफ़ी)

उसूले काफ़ी की दूसरी रवायत है, इमाम सादिक़ (अ.स.) फ़र्माते हैं:

मन अरफ़ल्लाहा, ख़ाफ़ल्लाहा, व मन ख़ाफ़ल्लाहा, सख़त नफ़सोहू अनिद्दुनिया।

जो अल्लाह की मारेफ़त रखता है वोह अल्लाह से डरता है, और जो अल्लाह से डरता है, दुनिया से उसका दिल उठ जाता है।

हज़रत अ़ली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) नहजुल

बलाग़ा में इरशाद फ़र्माते हैं:

आगाह हो जाओ कि तुम्हारा इमाम मताए दुनिया में पहनने के लिए दो पुराने लिबास और खाने के लिए दो रोटी के गिरवे पर इक्तेफ़ा करता है। आगाह हो जाओ कि तुम इस सूरत में ज़िंदगी नहीं बसर कर सकते हो लेकिन तुम परहेज़गारी और उस राह पर चलने की कोशिश करके और पाक दामनी और दीन के उमूर में मज़बूत रहकर मेरी मदद तो कर सकते हो?

इस फ़सीह तरीन जुम्ले से हमारी मआशी, मुआशेरती, तहज़ीबी और समाजी ज़िंदगी की आईनादारी होती है और यही चलन ज़िंदगी का हो तो दरे इमाम से दूरियाँ ख़त्म हो सकती हैं।

(२) इमाम (अलैहिस्सलाम) से पैवस्ता रहना

येह मौज़ूअ इमाम (अ.स.) की नुसरत व यावरी की आर्ज़ू का है। येह एक वसीअ मज़मून है। बड़े सब्र आज़्मा मराहिल की दास्तान है। बड़े इस्तेक़्लाल की राह रवी का सफ़र है। मुहासिबए नफ़्स की तहवील पर इसकी असास है। आब्ले-पाई के साथ कांटों पर चलने का सबक़ है और तरबियत गाहे इमाम में मश्क़ का उस्लूब है। लेकिन ... लेकिन ... लेकिन इस वादी में चन्द क़दम चलने के बाद ही ऐसा महसूस होने लगता है जैसे रूहुल क़ुदुस की आवाज़ कहीं दूर से आ रही है - ''मुबारक हो तुम्हें तुम्हारी आर्ज़ू की रौशन दुनिया।''

'मर्द बायद कि हिरासाँ न शवद
मुश्किली नीस्त कि आसाँ न शवद।'

यहाँ एक मिसाल, जो एक तारीख़ी वाक़ेआ है, क़ारेईन की ख़िदमत में रखकर नुसरते इमाम (अ.स.) की आर्ज़ू अगर परवान चढ़े तो इस नासिर व यावर, जिसके दिल में इस आर्ज़ू ने जनम लिया है, की आख़िरत कैसे सँवरती है। अपनी बात को और वाज़ेह कर दूँ। करबला तैयार हो रही थी। जनाब ज़ैनब (सलामुल्लाहअलैहा) ने इमाम हुसैन (अलैहिस्सलाम) से कहा: ''भय्या, दुश्मन की फ़ौज में दस्ता ब दस्ता इज़ाफ़ा हो रहा है। भय्या आपका कोई नासिर व मददगार नहीं आ रहा है? इमाम हुसैन (अ.स.) ने जवाब दिया ''बहेन, आ रहा है, इंतेज़ार करो। थोड़ी देर के बाद जनाब फ़िज़्ज़ा ने जनाब ज़ैनब (सलामुल्लाह अलैहा) को ख़बर दी ''बीबी आपके भाई के बचपन के दोस्त हबीब इब्ने मज़ाहिर आए हैं।'' बीबी ने कहा: ''फ़िज़्ज़ा हबीब को मेरा सलाम पहुँचा दो।'' फ़िज़्ज़ा ने हबीब से मुख़ातिब होकर कहा: ''ऐ हबीब! शहज़ादी ज़ैनब सलामुल्लाहअलैहा आप को सलाम कह रही हैं।'' हबीब ने अपना सर ज़मीन पर पटक दिया और कहा - ''कहाँ येह हक़ीर ग़ुलाम और कहाँ शहज़ादी ज़ैनब (स.अ.)।'' इमाम हुसैन (अ.स.) की नुसरत व यावरी ने हबीब को वोह मर्तबा दिया कि वोह सलाम जो ख़ातूने जन्नत (स.अ.) की बेटी सानिये ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा के लबे मुबारक से अदा हुआ था आज तक गोशाहाए अफ़्लाक में गूँज रहा है। और इमाम अलैहिस्सलाम की नुसरत व यावरी करने वालों के मरातिबे आलिया की निशानदेही कर रहा है। येह सलाम वोह गुलाब है जिसके ज़िक्र की महक हर मजलिसे अज़ा में फैली हुई है।

आज चौहद सदियाँ गुज़री हैं, हम अपने ग़ाएब इमाम (अ.स.) को सदा दे रहे हैं, **''अल-अजल, अल-अजल''** और दुआ करते हैं **''अल्लाहुम्मजअल्नी मिन अन्सारेही व अअवानेही व शीअतेही।''**

दुआ तो करते हैं लेकिन हबीब इब्ने मज़ाहिर के जैसा कलेजा कहाँ से लाएँ? और अगर येह हिम्मत व हौसला पैदा नहीं कर सकते तो कम से कम कुछ तो अपने अमल को आज़्मा लें ताकि इमाम (अ.स.) को मुँह दिखाने के लाएक़ रहें। इसलिए ज़रुरी है कि उठते-बैठते, जागते-सोते, सफ़र में हज़र में हर वक़्त कहते रहें - ''या अबा सालेहल महदी अदरिक्नी।''

(३) तैयारी - ज़ुहूरे इमाम (अ.स.) के लिए

आमादगी का लफ़्ज़ शीओं में ज़ुहूरे इमाम

अ़लैहिस्सलाम की निस्बत गश्त कर रहा है। हर मिल्लत का फ़र्द यक़ीन रखता है आपका ज़ुहूर होगा। सिर्फ़ शीआ़ ही नहीं बल्कि येह एक आ़लमी नज़रिया है। तमाम अक़वामे आ़लम इस अक़ीदए ज़ुहूरे महदी पर यक़ीन रखते हैं। फ़र्क़ माबैन शीआ़ और दीगर अक़वाम व मज़ाहिब में येह है कि हमारे सामने हक़ीक़त अज़हरो मिनश्शम्स की तरह साफ़ और रौशन है। मिस्ले दीगरान मुबहम और धुँधलके में किसी गुमशुदा तलाश की तरह नहीं है।

ऐसी सूरत में लाज़िम है कि इस क़ौम का हर फ़र्द ज़ुहूर के लिए पूरी तरह तैयार रहे या हमा वक़्त तैयारी में लगा रहे। जब ज़ुहूर की हक़ीक़त सूरज की तरह रौशन है तो हर फ़र्द को अपने किरदार पर लगे धब्बे साफ़ दिखाई पड़ रहे हैं और अगर देखने के बाद भी बदनुमा दाग़ व धब्बे किरदार से धोए न जाएँ तो आ़क़ेबत ख़राबे गराँ में गुम हो जाएगी। इस दाग़दार किरदार को साफ़ व पाकीज़ा बनाने के लिए चन्द बुनियादी अ़वामिल हैं।

मुहासिबए नफ़्स, कसरत से इस्तेग़फ़ार और या अबा सालेहल महदी अदरिक्नी की मुसलसल तकरार। जब नफ़्स के जंगल में अफ़्कारे इंसानी फँस जाते हैं और किरदार में एक सुकूत पैदा होने लगता है तो रहबरे हक़ीक़ी, अल्लाह तआ़ला का जानशीन इस अर्ज़े ख़ाकी पर उस मन्सबे आ़ली पर फ़ाएज़ है कि हमें वोह गिरने से बचा लेता है। नफ़्स के ख़ाहेशाती चंगुल से नजात दिलाता है और हमें इस क़ाबिल कर देता है कि हमारा ज़ाहिर हमारे बातिन का आईना बन जाता है और हम अपने तकवीनी नूर का विजदान करते हैं। इम्तेहानगाहे आ़लम में ऐसे बलंद व बाला ज़ीनों को क़दम ब क़दम तय करना आसान तो नहीं है लेकिन नामुमकिन भी नहीं है, और अगर हिदायत की रौशनी सामने हो तो कोई मुश्किल भी नहीं। कुछ क़दम के बाद ही रूहानी लज़्ज़तों के सिलसिले शुरू हो जाते हैं। डॉक्टर सैयद मुहम्मद बनी हाशिम ने अपनी किताब 'सुलूके मुन्तज़िरान' में इस ज़ुम्रे में वोह बातें की हैं जो अइम्मए मासूमीन (अ.स.) के अक़वाल की रौशनी में हैं और दिल में उतरनेवाली हैं। चुनांचे आमादगी से मुतअ़ल्लिक़ आयात व रवायात से हम सिर्फ़ एक पर इक्तेफ़ा करेंगे।

इरशादे परवरदिगार हो रहा है:

या अय्योहल्लज़ीना आमनू इस्बेरू व साबेरू व राबेतू, वत्तक़ुल्लाहा ल़अल्लकुम तुफ़्लेहून।

ऐ वोह लोग जो ईमान लाए, सब्र करो, साबित क़दम रहो, और राबेता रखो और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो शायद तुमको फ़लाह (कामियाबी) नसीब हो।''

यहाँ इमाम सादिक़ (अ.स.) ने इरशाद फ़र्माया है:

इस्बेरू अ़ला अदाइलफ़राएज़ व साबेरू अ़लल मसाएब व राबेतू अ़लल अइम्मा।

यानी वाजिबात की अदाएगी में मज़बूती से क़ाएम रहो और मुसीबतों और बलाओं में साबित क़दम रहो उन पर अपने अ़ज़ाएम और हिम्मत के साथ अपना ग़लबा रखो, शक व शुबहात में मुब्तेला न हो जाओ और जादए तक़दुस से क़दम न हटने पाएँ। और येह उसी वक़्त मुमकिन है जब इमामे वक़्त (अ.स.) से अपने राबेते मज़बूत होंगे, मुस्तहकम होंगे। जिसके नतीजे में ख़ौफ़े ख़ुदा हमें हर ख़ौफ़ से बचाए रखेगा। मौला अ़ली (अ.स.) का इरशाद है हर शख़्स का अ़मल उसकी हिम्मत व शुजाअ़त की क़द्रों से नापा तौला जाएगा। जब ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा हो जाता है तो किसी का ख़ौफ़ बाक़ी नहीं रहता। और राहे नजात और फ़लाह व बहबूदिए हयाते इंसानी के लिए चराग़ उल्फ़ते इमाम को रौशन रखता है।

लिहाज़ा, तैयारी, आमादगी, पा बरकाब रहने के लिए जज़्बए नुसरत व यावरी-ए-इमाम को ज़िंदा रखने के लिए हमें कोशाँ रहना चाहिये। फिर देखिए कैसे येह इंसान ख़ाक बसर होकर अफ़लाक के रास्तों को अपनी गुज़रगाह बना लेता है।

ऐ काश! ... ऐ काश! ... ऐ काश! बाराने रहमत हो और हमारे वुजूद की मिट्टी नर्म हो इसलिए कि 'हम अगर नम हों तो येह मिट्टी बहुत ज़रख़ेज़ है साक़ी' और हमारे महबूब इमाम के इशारे हमें दिखाई देने लगेंगे।

✦ ☆ ☆ ☆ ✦

शर्हे ज़ियारते इमामे ज़माना (अ.त.फ.श.) बरोज़ जुम्आ

(पिछले शुमार से जारी)

४) ***अस्सलामो अलैका अय्योहल मुहज़्ज़बुल ख़ाएफ***

''सलाम हो आप पर ए साहेबे तहज़ीब ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले।''

इस फिक़रे में इमाम अस्र हज़रत महदी अज्जलल्लाहो तआला फ़रजहुश्शरीफ़ के दो अलक़ाब बयान किए गए हैं। एक - ***'मोहज़्ज़ब'*** और दूसरे - ***'ख़ाएफ'***। लफ़्ज़ 'मोहज़्ज़ब' इस्म मफ़ऊल है बाबे तफ़ईल का और 'ह ज़ ब' अस्ल हुरूफ़ हैं। लुग़त में ***'मोहज़्ज़ब'*** के मानी हैं 'तहज़ीब शुदा', 'पाक शुदा', 'तरबियत शुदा' पाक और बग़ैर किसी ऐब के और वोह शख़्स जो बेहतरीन अख़लाक़ व औसाफ़ से आरास्ता हो। यक़ीनन ये सारी सिफ़ात हज़रत इमामे ज़माना (अ.त.फ.श.) पर मुन्तबिक़ होती हैं आप वोह पाक व पाकीज़ा हस्ती हैं जो अस्हाबे किसा के जानशीन हैं कि जिनकी तहारत व पाकीज़गी का एलान ख़ुदा वन्द मुतआल ने क़ुरआन ए करीम में किया है (सूरए अहज़ाब (३३): आयत ३३) आप वोह हैं कि जिनका मुरब्बी परवरदिगार-ए-आलम है और वोह ताहिर ज़ात कि जिसमें न कभी कोई ऐब था और न कभी ऐब का गुज़र होगा।

दूसरी सिफ़ात कि जिसका ज़िक्र फ़िक़्रे में है वोह है ***'ख़ाएफ'*** यानी ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाला। ***'ख़ाएफ'*** अरबी सर्फ़ के एतेबार से इस्मे फ़ाएल है। जो 'ख़ौफ़' से बना है जिसे इस्तेलाह में अजवफ़े वावी कहते हैं।

१. अहम्मीयते ख़ौफ़े ख़ुदा

क़ुरआन-ए-मजीद साहेबान ईमान की सिफ़ात व ख़सलतों का ज़िक्र करते हुए फ़र्माता है:

ततजाफा जुनूबोहुम अनिल मज़ाजेए यदऊना रब्बहुम ख़ौफ़ौं व तमऔं व मिम्मा रज़क़नाहुम युनफ़ेक़ून

बिस्तरे ख़ाब से वह अपने पहलू तही करते हैं, अपने परवरदिगार को ख़ौफ़ व उम्मीद से पुकारते हैं और जो कुछ रिज़्क़ हमने उन्हें अता किया है उसे (फ़ी सबीलिल्लाह) ख़र्च करते हैं।

इमामे मुत्तक़ियान हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) फ़र्माते है

अलख़ौफ़ो जलबाबुल आरेफ़ीन

''यानी ख़ौफ़े ख़ुदा ख़ुदा शेनासी अफ़राद का पैराहन है।''

(ग़ुररुल हेकम)

दूसरे लफ़्ज़ों में वोह लोग जो वाक़ई ख़ुदा की मारेफ़त रखते हैं और उसकी अज़मत व क़ुदरत व बुज़ुर्गी से वाक़िफ़ हैं वोह हर वक़्त, हर आन और हर लम्हा उससे डरेंगे और कभी भी उसके मुक़ाबले में नाशाइस्ता हरकतों और नाज़ेबा काम नहीं करेंगे।

लेहाज़ा पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेह फ़र्माते हैं:

अअलन्नासे मंज़ेलतन इन्दल्लाहे अख़वफ़ोहुम मिन्ह

(बेहारुल अनवार, जिल्द ७७, सफ़हा १८०, हदीस १०)

''यानी लोगों में बलन्दतरीन मरतबा अल्लाह के नज़दीक वोह लोग रखते हैं जो उससे सबसे ज़्यादा डरते हैं।''

२. ख़ौफ़े-ख़ुदा ख़ुदा शनासी की अ़लामत है

मुन्दर्ज़ा बाला हदीस जो मौलाए काएनात हज़रत अ़ली (अ.स.) से नक़्ल हुई है उससे वाज़ेह होता है कि ख़ौफ़ का तअ़ल्लुक़ मअ़रेफ़त और इ़ल्म से है। क़ुरआने करीम में इरशाद होता है:

इन्नमा यख़्शल्लाहा मिन एबादेहिल ओलमा

(सूरए फ़ातिर (३५): २८)

''उसके जुम्ला बन्दों में से सिर्फ़ अह्ले इ़ल्म (व मअ़रेफ़त) ही ख़ुदा से डरते है।''

अद्दाई एलल्लाह और सिराजे मुनीर हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेह) फ़र्माते है:

मन काना बिल्लाहे अ़अ़रफ़ो काना मिनलल्लाहे अख़वफ़

(बेहारुल अनवार - जिल्द ८०, सफ़हा ३९३, हदीस ६४)

''जो जितना ख़ुदा शेनास होगा उतना ही वोह ख़ुदा से डरेगा।''

बाक़िरे उ़लूमुल अम्बिया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ.स.) फ़र्माते है:

ऐ फ़रजंदे आदम! तेरा दिल सख़्त हो चुका है क्योंकि तू अल्लाह की अ़ज़मत व बुज़ुर्गी को फ़रामोश कर चुका है। पस अगर तू अल्लाह का इ़ल्म और उस की अ़ज़मत की मअ़रेफ़त रखता होता तो हर आन उससे डरता।

(अमाली शेख़ अबूजाफ़र तूसी (र.अ.), सफ़हा २०३, हदीस ३४६)

३. अ़लामाते ख़ाएफ़

ख़ौफ़े-ख़ुदा रखने वाले बंदों की कुछ अ़लामतें हैं।

क़ुरआने मजीद में एलाने हक़ होता है:

व अम्मा मन ख़ाफ़ा मक़ामा रब्बेही व नहन्नफ़्स अ़निल हवा, फ़इन्नलजन्नता हियलमावा

(सूरए नाज़ेआत (७९): ४०-४१)

''जो शख़्स अपने परवरदिगार की अ़ज़मत से डरे और अपने नफ़्स को हवा-ओ-हवस से रोके यक़ीनन बेहिश्त ही उसका मक़ाम है।''

अमीरुल मोअमेनीन हज़रत अ़ली (अ.स.) फ़र्माते हैं।

बेशक अल्लाह के कुछ बंदे ऐसे हैं कि जिनके दिल ख़ौफ़े-ख़ुदा से पारा-पारा हो चुके हैं। जिसकी बेना पर वोह (ज़्यादा) बात करने से परहेज़ करते हैं जबकि वोह फ़सीह, बलीग़, आ़क़िल, साहेबाने दिल और नजीब हैं। वोह अपने पाक-व-पाकीज़ा, अ़अ़माल के ज़रीए ख़ुदा की तरफ़ तेज़ी से बढ़ रहे हैं। ख़ुदा की राह में वह अपने ज़्यादा अ़अ़माल को भी कम समझते है और क़िल्लते अ़मल और कोताहियों से नाराज़ होते हैं। और अपने आप को लोगों में बदतरीन शुमार करते हैं जबकि वोह ज़रंग और नेकूकार हैं।''

(बेहारुल अनवार, जिल्द ६९, सफ़हा २८६, हदीस २१)

अगर हम इस हदीस शरीफ़ पर ग़ौर करें जो बाबे मदीनतुल इल्म (अ.स.) के लबहाए अक़दस से सादिर हुए है तो हमें अंदाज़ा होगा कि आज हमारे मुआ़शरे में ऐसे अफ़राद की कितनी क़िल्लत है कि जिनमें वाक़ई ख़ौफ़े ख़ुदा पाया जाता है। वह अफ़राद कि जिनकी ज़बानों को ख़ौफ़े-ख़ुदा ने गूँगा कर दिया है। वोह अफ़राद जो हक़ीक़तन फ़सीह व बलीग़ और साहेबाने अक़्ल व ख़ेरद हैं। वोह अफ़राद जो अ़अ़माले सालेहा के पैकर हैं वोह अफ़राद जो दिन और रात, सुब्ह व शाम दीन की ख़िदमत करने के बावजूद अपने अ़अ़माल को बहुत ही कम गरदान्ते हैं और जब वाक़ई वोह कोई ख़िदमत किसी बेना पर अंजाम नहीं दे पाते हैं तो अपने नफ़्स से नाराज़ होते हैं और अपनी मज़म्मत करते हैं। होशियार और ज़रंग होने के बावजूद वोह अपना शुमार बदतरीन बंदों में करते हैं। अल्लाहो अकबर!

हमारे अइम्मए मअ़सूमीन (अ.स.) हमसे कैसी तवक़्क़ो रखते हैं और हमारा मुआ़शरा क्या हो गया है।

४. जो अल्लाह तआला से डरता है, उससे सारी चीज़ें डरती हैं

जुम्ला नेअ़मतों मे से जो अल्लाह तआला ने अपने सालेह बंदों को नवाज़ा है उनमें एक येह है कि उसने अपनी दीगर मख़्लूक़ात में अपने अच्छे बंदो का रोब व ख़ौफ़ डाल दिया है। ख़ुदा वन्द आलम अपनी किताबे हकीम में सराहत के साथ एलान कर रहा है कि हमने काफ़िर व मुशरेकीन के दिलों में मोमिनों का ख़ौफ़ डाल दिया है।

(रुजू करें सूरए आले इमरान: १५१ और सूरए अनफ़ाल: १२)

सादिक़े आले मोहम्मद इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) फ़र्माते हैं

मन ख़ाफ़ल्लाहा अख़ाफ़ल्लाहो मिन्हो कुल्ल शैइँव व मन लम यख़फ़िल्लाहा अख़ाफ़हू मिन कुल्ले शै

(अल-काफ़ी, जिल्द २, सफ़हा ६८, हदीस ३)

''यानी जो अल्लाह से डरता है अल्लाह हर चीज़ को उस से डराता है और जो अल्लाह से नहीं डरता अल्लाह उसे हर चीज़ से डराता है।''

दूसरे लफ़्ज़ों में हमें ख़ुदा वन्द आलम के अ़लावा न किसी से डरना चाहिए और न किसी और के दर पर सरे तसलीम ख़म करना चाहिए। क्योंकि शैतान रजीम का एक हीला यह है कि वोह अल्लाह के नेक बन्दों को दुनियावी चीज़ों से डराता रहता है। लेकिन अल्लाह के नेक और सालेह बंदे उसके हीले का शिकार नहीं होते हैं।

ख़ुदा वन्द करीम ने अपनी किताब क़ुरआने मजीद में हमें आगाह किया कि:

इन्नमा ज़ालेकुमुश्शैतानो युख़ौवेफ़ो औलियाअहू, फ़ला तख़ाफ़ूहुम व ख़ाफ़ूने इन कुन्तुम मोमेनीन

(सुरए आले इमरान: १७५)

''वह शैतान है जो अपने दुश्मनों के दिलों में ख़ौफ़ ईजाद करता है। अगर तुम साहेबाने ईमान हो तो उससे ख़ौफ़ ज़दा न हो बल्कि मुझसे डरो।''

ख़ौफ़ की मुतअद्दिद क़िस्में हैं जैसे ख़शेया, वजल रहबा, हैबत। जो हज़रात तफ़सीलात जानना चाहते हैं वोह रुजू करें किताब अल-ख़ेसाल (मुसन्निफ़ मरहूम शेख़ सदूक़ (र.अ.), स. २८१, बेहारुल अनवार (मुसन्निफ़ अ़ल्लामा मजलिसी (र.अ.) जि. ७०, ह. ३२३, बाब ५९, बाबुल खौफ़ वर्रजा और जि. ६७, हिकायातुल ख़ाएफ़ीन

यूँ तो इस बह्स में और भी अबवाब हैं मगर इख़्तेसार को मद्दे नज़र रखते हुए हम ख़ौफ़ की बह्स को यहीं पर तमाम करते हैं।

५) ***अस्सलामो अ़लैका अय्योहलवलीयुन्नासेह***

सलाम हो आप पर ऐ वलीए नासेह।

इस फ़िक़्रे में भी इमामे ज़माना अ़ज्जलल्लाहो तआला फ़रजहुश्शरीफ़ को दो अल्क़ाब से याद किया गया है एक ***'वली'*** और दूसरा ***'नासेह'***।

वली: अ़रबी ज़बान मे शायद ही कोई लफ़्ज़ इतनी वुसअ़त रखता है जितना लफ़्ज़े ***वली***। ईदे ग़दीर के ख़ुसूसी शुमारे में हम लफ़्ज़े ***मौला*** (जो वली से अख़्ज़ किया गया है) पर तफ़सीली बह्स कर चुके हैं। वली बर वज़्ने फ़ईल है जो सीग़ए मुबालेग़ा है। येह अल्लाह तआला के नामों में से एक नाम है।

वली के मानी होते हैं उमूर का मुतवल्ली व सरपरस्त, मालिक, मुदब्बिर, क़ादिर, अमीर, सुलतान, नक़ीब वग़ैरह।

अ़रबी अदिब्बा जिसमें इब्ने मंज़ूर, इब्ने असीर, इब्ने सिक्कीत, सैबूया सभी ने इस पर तफ़सीली बह्स की है। अगर हम इन मआ़नी पर ग़ौर करें तो सभी मआ़नी एक हक़ीक़त की तरफ़ इशारा करते हैं यानी वोह ज़ात जिसको मुकम्मल तसल्लुत और हक़्क़े तसर्रुफ़ हासिल है। यक़ीनन इमामे ज़माना हज़रत बक़ीयतुल्लाहिल अअ़ज़म (अ.त.फ.श.) की ज़ात इन सारी सिफ़ात की हामिल है।

नासेह: नासेह इस्मे फ़ाएल है यानी नसीहत करने वाला। इस फ़िक़्रे में हमारे इमाम (अ.स.) को इस

सिफ़त (नासेह) से याद किया गया हैं। दीने मुक़द्दसे इस्लाम में नसीहत और मौएज़ा की काफ़ी ताकीद की गई है।

अ. अहम्मीयते नसीहत

पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेह ने फ़र्माया:

इन्ना अ़ज़मन्नासे मन्ज़ेलतन इन्दल्लाहे यौमल क़ियामते अमशाहुम फ़ी अ़र्ज़ेही बिन्नसीहते लेख़ल्क़ेही

(अल-काफ़ी, जिल्द २, सफ़हा २०८, हदीस ५)

ख़ुदा के नज़दीक सबसे ज़्यादा मक़ाम व मन्ज़ेलत वोह शख़्स रखता है जो बन्दगाने ख़ुदा को नसीहत करने में सबसे ज़्यादा कोशाँ रहे।

नसीहत करने से आपसी मोहब्बत व मवद्दत में इज़ाफ़ा होता है। क्योंकि हर मोमिन दूसरे मोमिन का बरादरे ईमानी है। लेहाज़ा हर एक का फ़रीज़ा है कि अपने भाई को नसीहत व मौएज़ा करता रहे। नसीहत की बुनियाद ही मवद्दत है जो हासिद होगा वोह कभी किसी को अच्छी नसीहत नहीं करेगा और कभी किसी का ख़ैर ख़ाह नहीं होगा।

ब. 'नासेह' की अ़लामतें

पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेह फ़र्माते हैं:

अम्मा अ़लामतुन्नासेह फ़अरबअ़तुन: यक़्ज़ी बिलहक़्क़े व यूतिलहक़्क़ा मिन नफ़्सेही व यर्ज़ा लिन्नासे मा यर्ज़ाहो लेनफ़्सेही वला यअ़तदी अ़ला अहदिन

(तोहफ़ुलउ़क़ूल (इब्ने शअ़ब हर्रानी), सफ़हा २०)

''नासेह और ख़ैर ख़ाह की चार निशानियाँ हैं: (१) वोह जब भी फ़ैसला करता है हक़ के साथ करता है। (२) अपनी तरफ़ से दूसरों को हक़ देता है। (३) जो अपने लिए चाहता है वही लोगों के लिए भी चाहता है और (४) किसी पर दस्तदराज़ी और किसी की हक़ पामाली नहीं करता है।''

यक़ीनन आज हमारे इमामे वक़्त (अ.त.फ.श.) से बेहतर 'नासेह' और ख़ैर ख़ाह हमें नहीं मिल सकता। आप (अ.त.फ.श.) हमारी ख़ैर ख़ाही फ़र्माते हैं। अब येह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम आप (अ.त.फ.श.) की नसीहतों को क़ुबूल करें, उन पर अ़मल करें, ऐसा न हो कि हम इस आयए करीमा के मिस्दाक़ बन जाएँ।

वला यनफ़ओकुम नुस्ही इन अरद्तो अन अन्सहा लकुम इन कानल्लाहो युरीदो अँय्युग़वेयकुम

(सूरए हूद (११): ३४)

''और मेरी नसीहत तुम्हें फ़ाएदा नहीं पहुँचाएगी अगर मैं चाहूँ कि तुम्हें नसीहत करूँ अगर अल्लाह येह इरादा रखता है कि तुम्हें गुमराही की राह पर छोड़ दे।''

हो सकता है कुछ लोगों के ज़ेहनों मे येह सवाल पैदा हो कि इमाम (अ.स.) ग़ैबत में रहकर कैसे नसीहत फ़र्मा सकते हैं? इस का जवाब वही है जो उस सवाल का है कि इमामे ग़ाएब का क्या फ़ाएदा है? येह बात अज़हाने आलिया में महफ़ूज़ रहे कि ग़ैबत हमारी तरफ़ से है इमाम (अ.स.) की तरफ़ से नहीं। जैसा कि चौथे इमाम हज़रत ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) ने फ़र्माया कि ग़ैबते कुबरा में कुछ इस तरह के मुख़लिस अफ़राद होंगे कि जिनका अ़क़ीदा इतना पुख़्ता होगा कि ग़ैबत उनके लिए मुशाहेदे की मानिन्द होगी। यही हक़ीक़ी मोमिन हैं और हमारे सच्चे शीआ और यही वोह अफ़राद हैं जो लोगों को दीने ख़ुदा की तरफ़ दावत देते हैं, एलानिया तौर पर और ख़ामोशी से।

आइए हम सब मिलकर यही दुआ करें कि अल्लाह तआ़ला हम सब को येह तौफ़ीक़ मरहमत फ़र्माए कि हमारा शुमार भी ऐसे ही अफ़राद में हो।

(बक़िया आइन्दा इन्शाअल्लाह)

✦ ☆ ☆ ☆ ✦

किताबुल ग़ैबा यासिरे आले मोहम्मद (अलैहिमुस्सलाम)

इल्मी दुनिया में मुफ़ीद तरीन मीरास किताब 'अल-ग़ैबा' है। इस किताब का मौज़ूअ इमामत है जो हमारे अक़ाएदी मौज़ूआत का अहम तरीन जुज़ है।

येह क़ीमती सरमाया (किताबुल ग़ैबा) अपने आसार के लेहाज़ से तक़रीबन ख़त्म हो चुका था ताहम इसका क़लमी नुस्ख़ा मौजूद था। किताबत की ग़लतियों की बेना पर मफ़ाहीम में पेचीदगियाँ पैदा हो गई थीं। इन ख़ामियों पर आलिमे आमिल व मोअल्लिम मरहूम अल्लामा रिज़वानुल्लाह अलैह की नज़र थी। आप ने इन ख़ामियों की तसहीह और इस की इशाअत के लिए तक़रीबन तीस साल पहले इक़दाम फ़र्माया।

मुअल्लिफ़ का मुख़तसर तआरुफ़

इस मुख़तसर मुक़द्दमे के बाद मुअल्लिफ़ का मुख़तसर तआरुफ़ पेश करना ज़रुरी है।

नामे किताब - किताबुल ग़ैबा

नामे मुअल्लिफ़ - मोहम्मद बिन इब्राहीम बिन जाफ़र

कुनीयते मुअल्लिफ़ - अबू अब्दुल्लाह

लक़बे मुअल्लिफ़ - अल कातिबुन्नोमानी

उर्फ़ियते मुअल्लिफ़ - इब्न (अबी) ज़ैनब

चौथी सदी हिजरी की इब्तेदा के शीआ मुहद्देसीन में आप का नाम सरे फ़ेहरिस्त है।

किताबे अरबा की फ़ेहरिस्त में बेहतरीन किताब 'अल-काफ़ी' के मुअल्लिफ़ सेक़तुल इस्लाम शैख़ मोहम्मद इब्ने याक़ूब इब्ने इस्हाक़ कुलैनी (र.अ.) के शागिर्द थे और उन्हीं से दर्से हदीस हासिल किया और अपने उस्ताद (शैख़ कुलैनी) के कातिब क़रार पाए इसीलिए इस लक़ब से शोहरत पाई।

किताबे ग़ैबत जो आम तौर पर ग़ैबते नोमानी के नाम से मशहूर है, छब्बीस (२६) अबवाब पर मुश्तमिल है। मकतबतुस्सुदूक़, तेहरान बाज़ार मस्जिद सुलतानी से शाए होने वाली येह किताब ३३२ सफ़हात पर मुश्तमिल है। इशाअत की तारीख़ नहीं लिखी है लेकिन सने तसहीह १३९७ हिजरी है।

पहला बाब

५२ रवायतें, जिनमें आले मोहम्मद (अ.स.) के राज़ को उन लोगों से महफ़ूज़ रखने की बात की है जो उसके अह्ल नहीं है। मिसाल के तौर पर मोअतज़ेला जो फ़ज़ीलत व बरतरीए अमीरुल मोमेनीन (अ.स.) के क़ाएल हैं। लेकिन नाक़िस को कामिल पर मुक़द्दम समझते हैं।

अफ़मँय्यहदी इललहक़्क़े अहक़्क़ो अँय्युत्तबअ अम्मन ला यहिद्दी इल्ला अँय्योहदा फ़मा लकुम कैफ़ा तहकोमून

(सूरए यूनुस : ३५)

जो शख़्स हक़ की राह दिखाता है क्या वोह ज़्यादा हक़दार है कि उसके हुक्म की पैरवी की जाए या उस शख़्स की जो ख़ुद हिदायत याफ़्ता नही है (यानी दूसरा जब तक उसे राह न दिखाए वोह देख नहीं पाता है) पस तुमको क्या हो गया है? तुम किस तरह हुक्म देते हो?

मोअतज़ेला हों या अशाएरा या फिर दूसरे नासबी, दुश्मनाने अह्लेबैत (अ.स.) की आँखें फूटी हुई हैं। वोह हक़ और बातिल में तमीज़ नहीं कर पाते इसी तरह शीओं में भी ऐसे लोग पाए जाते हैं जो असरारे आले मोहम्मद (अ.स.) को समझने की

अह्लियत व सलाहियत नहीं रखते लेहाज़ा ऐसे लोगों के सामने उन असरार को हरगिज़ न बयान किया जाए वरना वोह लोग ख़ुदा व रसूल और अइम्मा को भी झुठला देंगे।

इमाम सादिक़ (अ.स.) फ़र्माते हैं:

कुछ लोग मुझे अपना इमाम तसव्वुर करते हैं। ख़ुदा की क़सम मैं उन का इमाम नहीं हूँ। ख़ुदा उन पर लानत करे क्योंकि जिन बातों को मैं छिपाता हूँ वोह उसे आश्कार कर देते हैं। मैं येह और वोह (क़ज़ा व क़ज़ा) कहता हूँ वोह कहते हैं उन का (इमाम के क़ौल का) मतलब यक़ीनन फलाँ शख़्स है और वही है।

और हज़रत येह फ़र्माते हैं:

इन्नमा अना इमामो मन अताअनी

मैं सिर्फ़ उसका इमाम हूँ जो मेरी इताअत करता है।''

(बाब १, ह. ८)

दूसरा बाब

येह आयत ***वअतसेमू बेहब्लिल्लाहे जमीअन व ला तफ़र्रक़ू***

की तफ़सीर पर मुश्तमिल है।

तुम सबके सब ख़ुदा की रस्सी को मज़बूती से थामे रहो और आपस में फूट न डालो।

रावी ने पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम से सवाल किया - ऐ अल्लाह के रसूल मैंने सुना है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने अपनी किताब मे फ़र्माया कि '***वअतसेमू...***' तो वोह रस्सी क्या है जिससे मुतमस्सिक रहने के लिए कहा गया है और किस तफ़रक़ा से बचने के लिए कहा गया है? पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने अपने सर को झुका लिया और थोड़ी देर ख़ामोश रहे फिर सर को उठाया और हाथों से अली (अ.स.) की तरफ़ इशारा किया और फ़र्माया:

हाज़ा हब्लुलल्लाहिल्लज़ी मन तमस्सका बेही ओसेमा बेही फ़ी दुनियाहो व लम यज़ल्ला बेही फ़ी आख़ेरतेही

येह अल्लाह की रस्सी हैं जो इन्हें थाम लेगा दुनिया में महफ़ूज़ होगा और आख़ेरत में हरगिज़ गुमराह न होगा (यानी आख़ेरत में भी महफ़ूज़ होगा)

(बाब २, हदीस १)

तीसरा बाब

वोह रवायतें जो इमामत व ख़िलाफ़त के बारे में हैं इस बाब में नक़्ल की गई हैं। मनसबे इमामत और फिर इमाम का अपने बाद के इमाम को जानशीन बनाना येह दोनों काम अल्लाह के इख़्तेयार में हैं। इमाम सादिक़ (अ.स.) के सामने तक़रीबन २० अफ़राद मौजूद थे - इमाम (अ.स.) ने फ़र्माया

शायद तुम येह ख़याल करते हो कि इमामत के मुआमेले में जानशीन का मुअय्यन करना हमारे ख़ानदान के किसी फ़र्द के इख़्तियार में है कि जिसको चाहे इमाम बना दे। ख़ुदा की क़सम (ऐसा नहीं है) बल्कि येह एक अह्द व पैमान है जो ख़ुदा की जानिब से रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम पर नाज़िल हुआ है जिसमें हर शख़्स (इमाम) का नाम तरतीब वार लिखा है।

(बाब ३, हदीस १)

चौथा बाब

इस बाब की हदीसों में तहरीर है कि इमाम बारह होंगे और वोह ख़ुदा की जानिब से मुअय्यन होंगे।

हज़रत जिबरईल पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की ख़िदमत में आए और अर्ज़ किया:

ऐ मोहम्मद! ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने आपको हुक्म दिया है कि फ़ातेमा (स.अ.) की शादी अली (अ.स.) से कर दें। पस रसूलेख़ुदा सल्लअम ने हुक्मे ख़ुदा वन्दी की तअमील की।

(बाब ४, हदीस १)

पाँचवाँ बाब

इस बाब में ऐसी हदीसें नक़्ल हुई हैं जिन में मुद्दइयाने इमामत और जिन लोगों ने हक़ीक़ी इमाम को छोड़ कर दूसरों को अपना इमाम माना है या बनाया है उनकी मज़म्मत की गई है। मुलाहेज़ा हो, इमाम सादिक़ (अ.स.) फ़र्माते हैं:

तीन तरह के लोग होंगे जिन से रोज़े क़यामत ख़ुदा गुफ़्तुगू नहीं करेगा और न ही उनको पाक क़रार देगा और उन लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब मुक़र्रर किया है। वोह लोग जो ख़ुद के लिए ख़ुदा की जानिब से मुअय्यन करदा इमामत के मनसब का दावा करेंगे और दूसरा गरोह वोह है जो ख़ुदा की जानिब से नस्ब करदा इमाम का इन्कार करेंगे। तीसारा गरोह वोह है जो येह गुमान करता है कि मज़कूरा दो गरोह के लिए इस्लाम में कुछ हिस्सा है। (यानी उन दो गरोह के ज़रीए इस्लाम को कोई फ़ाएदा पहुँचेगा)

(बाब - ५, हदीस ३)

छठा बाब

इस बाब में पैग़म्बर अकरम (स.अ.व.अ.) के जानशीनों की तअदाद के सिलसिले में वोह हदीसें जिन्हें अह्ले-सुन्नत के मशहूर व मअरुफ़ ओलमा ने अपनी किताबों में अकाबिरे सहाबा से नक़्ल की हैं उन हदीसों को मुअल्लिफ़ ने इस बाब मे तहरीर किया है मुलाहेज़ा हो:

मसरुक़ कहते हैं हम लोग इब्ने मसऊद के पास थे एक शख़्स ने उन से कहा: आया तुम्हारे पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने ख़बर दी है कि उन के बाद उनके कितने जानशीन होंगे? उन्होंने कहा - हाँ, और उस शख़्स ने कहा की तुमसे पहले किसी ने मुझसे येह सवाल नहीं किया और अलबत्ता तुम उम्र के लेहाज़ से उनमें सबसे जवान हो। मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम को फ़र्माते सुना है:

तकूनो बादी इद्दतो नुक़बाए मूसा अलैहिस्सलाम

मेरे बाद नुक़बाए मूसा (अ.स.) की तअदाद (तादाद) में मेरे जानशीन होंगे।

(बाब ६, हदीस १)

इसी तरह दूसरी हदीस में फ़र्माया

बारह नफ़र नुक़बाए बनी इस्राईल की तादाद के बराबर होंगे।

(हदीस ३)

इस तरह अनस बिन मालिक, जाबिर बिन समरस्सवाई, अबू हुज़ैफ़ा, समुरतब्नो जुनदब और अब्दुल्लाह इब्ने अम्र इब्नुल आस वग़ैरा से रवायतों को नक़्ल किया है।

सातवाँ बाब

जो शख़्स किसी एक इमाम के बारे में शक करे और उसी हालत में शब गुज़ार दे और दिन को पा ले और अपने इमाम को न पहचाने, उसकी मौत जाहेलीयत की मौत होगी।

इसी तरह वोह इन्सान जो दीन ख़ुदा को बग़ैर इमाम के क़ुबूल करे ख़ुदा उसके अअमाल को क़ुबूल नहीं करेगा।

इमाम बाक़िर (अ.स.) ने फ़र्माया:

मन दानल्लाहा बेएबादतिन यजहदो फ़ीहा नफ़्सहू व ला इमामा लहू मिनल्लाहे तआला फ़सअयोहू ग़ैरो मक़बूलिन व हुवा ज़ाल्लुन मुतहय्यरुन

(बाब ७, हदीस १)

इस बाब की हदीसों पर अल-मुन्तज़र के मुख़तलिफ़ शुमारों में और एसोसीएशन से शाए होने वाली दूसरी इशाअतों में भरपूर रोशनी डाली गई है। क़ारेईन मुतालेआ कर सकते हैं।

आठवाँ बाब

ज़मीन हुज्जते ख़ुदा से ख़ाली न होगी।

नवाँ बाब

वोह रवायतें जिनमें वारिद हुआ है कि अगर ज़मीन पर सिर्फ़ दो शख़्स बाक़ी रह जाएँगे तो उनमें से एक हुज्जते

ख़ुदा होगा।

दसवाँ बाब

बारहवें इमाम, इमामे मुन्तज़र की ग़ैबत के सिलसिले में और ग़ैबत में गुमराह करने वालों से होशियार रहने के लिए हज़रत अमीरुल मोअमेमीन (अ.स.) के इरशादे गेरामी नक़्ल किए गए हैं। येह बहुत बड़ा बाब है इसमें बहुत सी फ़स्लें हैं। सफ़हा १४० से १९४ तक, ५४ सफ़हात पर मुश्तमिल इस बाब में ग़ैबत के मुख़तलिफ़ पहलुओं पर हदीसें वारिद हुई हैं और मुहक़्क़िक़ अ़ली अकबर ग़फ़ारी ने जय्यद अ़ोलमा के नज़रीयात से इस बाब को चार चाँद लगा दिए हैं।

हम सिर्फ़ एक हदीस पर इक्तेफ़ा करते हैं...

फ़ुरात बिन हनीफ़ा ने इमाम सादिक़ (अ.स.) से रवायत की है और आँजनाब (अ.स.) ने अपने अजदाद के ज़रीए नक़्ल किया है कि अमीरुल मोअमेनीन (अ.स.) की ख़िलाफ़त के ज़माने में फ़ुरात का पानी चढ़ गया इसके बाद हज़रत इमाम अमीरुल मोअमेनीन (अ.स.) और उनके दोनों फ़र्ज़ंद इमाम हसन और इमाम हुसैन (अ.स.) घोड़े पर सवार हुए जब आपका गुज़र ताएफ़ए सक़ीफ़ पर हुआ तो उन लोगों ने कहा अ़ली (अ.स.) आए हैं और पानी के ख़तरात से हमें हमफ़ूज़ रखेंगे फिर अ़ली (अ.स.) ने फ़र्माया - ख़ुदा की क़सम मैं और मेरे ये दोनों बेटे शहीद कर दिए जाएँगे और इस बात में शक नहीं है कि ख़ुदा मेरे फ़र्ज़ंदों में से एक शख़्स को आख़ेरी ज़माने में उठाएगा जो कि हमारे ख़ून का इन्तेक़ाम लेगा और यक़ीनन वोह लोगों की नज़रों से इसलिए ग़ायब होगा कि कहीं ग़ैबत के ज़माने में गुमराह अफ़राद उन्हें पहचान न लें। यहाँ तक कि जाहिल व नादान कहेंगे:

मा लिल्लाहे फ़ी आले मुहम्मदिन मिन हाजतिन

ख़ुदा को आले मोहम्मद की ज़रुरत नहीं है।

(बाब १०, हदीस १)

पाँचवीं फ़स्ल में दीगर अइम्मा (अ.स.) से हदीसें नक़्ल की हैं। यहाँ हम एक हदीस नक़्ल कर रहे हैं जिससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि हज़रत महदी (अ.स.) की ग़ैबत पर किन लोगों का ईमान होगा?

इमाम सादिक़ (अ.स.) फ़र्माते हैं:

अगर क़ाएम क़याम करेगा तो लोग उन (अ.स.) का इनकार करेंगे क्योंकि वह एक नौजवान की सूरत में उनके सामने आएँगे। सिवाए उन लोगों के कि जिन से ख़ुदा वन्द आलम ने आलमे ज़र में मीसाक़ व अ़हदो पैमान लिया है, कोई साबित क़दम न होगा।

(बाब १०, फ़स्ल १, हदीस ४३)

ग्यारहवाँ बाब

ऐसी हदीसें जिनमें शीअ़याने अह्लेबैत (अ.स.) को ग़ैबत के ज़माने मे सब्र के साथ ज़हूर का इन्तेज़ार करने का तलक़ीन की गई है:

रावी इमाम बाक़िर (अ.स.) से आयते 'इस्बेरू, साबेरू व राबेतू' के बारे में पूछा तो हज़रत इमाम बाक़िर (अ.स.) ने फ़र्माया:

''सब्र करो वाजिबाते इलाही के अंजाम देने में और सब्र व तहम्मुल से काम लो, दुश्मनों के मुक़ाबले में और अपने इमाम के बारे में होशियार रहो (यानी इन्तेज़ार के ज़रीए अपना राबेता उनसे बनाए रखो)।

बारहवाँ बाब

ग़ैबते कुबरा में शीओं के दरमियान तफ़रेक़ा और उन के इम्तेहान व आज़्माइश को बयान करने वाली हदीसें नक़्ल हुई हैं। नमूने के लिए हम एक हदीस नक़्ल कर रहे हैं।

इमाम सादिक़ (अ.स.) ने फ़र्माया:

'वोह अम्र वाक़े न होगा (ज़हूर न होगा) जब तक तुम में से बाज़ अफ़राद दूसरे बाज़ लोगों के मुँह पर थूक न लें - और एक दूसरे पर लानत न कर लें और यहाँ तक कि तुम में से बाज़ लोग एक दूसरे को झूठा न कह लें।

तेरहवाँ बाब

इमाम महदी (अ.स.) की सिफ़ात और रफ़्तार व गुफ़्तार के बारे में हदीस व क़ुरआन की रोशनी में बयान फ़र्माया है।

इसी बाबत में जनाब नरजिस ख़ातून (स.अ.) के औसाफ़ भी बयान हुए हैं। इमामे ज़माना (अ.स.) की रविश उन (अ.स.) के फ़ैसले का तरीक़ा, ऐसी अ़लामतें जिन के ज़रीए इमाम (अ.स.) को पहचाना जाएगा, उन का लिबास क्या होगा, उन (अ.स.) के हमराह होने वाले सिपाहियों और सवारों की क्या हालत होगी? इन तमाम मौज़ूआत पर रवायात नक़्ल हुई हैं।

चौदहवाँ बाब

ज़हूरे इमाम महदी (अ.स.) से पहले कुछ अ़लामतें ज़ाहिर होंगी और उस के बाद इमाम का ज़हूर होगा।

तज़क्कुर

यहाँ सिर्फ़ एक बात ज़ेह्न नशीन होना चाहिए कि हम अ़लामतों का इन्तेज़ार नहीं कर रहे हैं बल्कि इमाम महदी (अ.स.) का इन्तेज़ार कर रहे हैं। येह बात भी याद रहे कि इमामे ज़माना (अ.स.) का ज़हूर हर हालत मे होकर रहेगा इस में कोई बदा वाक़े नहीं हो सकता। जिस तरह क़यामत का वाक़े होना यक़ीनी है उसी तरह ज़हूरे इमामे महदी (अ.स.) का होना भी यक़ीनी है। अलबत्ता अ़लामतों में बदा वाक़े हो सकता है। इसीलिए हम किसी भी अ़लामत के ज़ाहिर हुए बग़ैर ही हर वक़्त ज़हूर की दुआ करते हैं और हर वक़्त ज़हूर की दुआ करते रहना इस बात की दलील है कि हज़रत (अ.स.) का ज़हूर किसी भी वक़्त हो सकता है।

पंद्रहवाँ बाब

इन रवायतों में ज़हूर से पहले पेश आने वाली सख़्तियों और मुसीबतों की तरफ़ इशारा किया गया है। मुफ़ज़्ज़ल बिन उमर कहते हैं कि हम लोग इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में थे और हज़रत क़ाएम (अ.स.) का ज़िक्र हो रहा था। मैंने कहा कि मैं उम्मीद करता हूँ कि उन का काम (ज़हूर) आसानी से अंजाम पाएगा। पस हज़रत (अ.स.) ने फ़र्माया:

ला यकूनो ज़ालेका हत्ता तमसहुल अ़लक़ा वल अ़रक़

वोह अम्र (ज़हूर) वाक़े न होगा यहाँ तक़ कि (शदाएद व मुश्किलात इस हद तक पहुँच जाएँगे कि) तुम जमे हुए ख़ून और पसीने को साफ़ करोगे (इस राह में मुसीबतें इतनी ज़्यादा होंगी कि जिस की वजह से इन्सान के ख़ून जम जाएँगे और हड्डियों से गोश्त निकल आएगा यानी हवादिस पूरी तरह से घेर लेंगे)।

(बाब - १५, हदीस ३)

सोलहवाँ बाब

इस बाब में ज़हूर के वक़्त को मुअ़य्यन करने से मना करने वाली हदीसें बयान हुई हैं। मोहम्मद बिन मुस्लिम कहते हैं, इमाम सादिक़ (अ.स.) ने फ़र्माया:

''ऐ मोहम्मद! जो भी हमारी जानिब से ज़हूर का वक़्त बताए तुम उसको झुठलाने मे हरगिज़ ख़ौफ़ न खाना क्योंकि

ला नोवक़्क़ेतो लेअहदिन वक़्तन

हम ने किसी से (क़ाएम के ज़हूर) के वक़्त को मुअ़य्यन नहीं किया है।

(बाब - १६, हदीस ३)

सत्रहवाँ बाब

नादान और जाहिलों के करतूतों से हज़रत इमाम महदी (अ.स.) को ज़हूर के बाद जो अज़ीयतें पहुँचेंगी, उन हदीसों का ज़िक्र है इमाम सादिक़ (अ.स.) ने फ़र्माया:

जब हमारा क़ाएम (अ.स.) क़याम करेगा तो लोगों की जेहालत और नादानी का सामना करना होगा और येह अज़ीयत जाहेलीयत के दौर के नादानों से पैग़म्बरे ख़ुदा (सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेह) को पहुँचने वाली अज़ीयतों से ज़्यादा सख़्त होगी।

मैंने अर्ज़ किया येह किस तरह मुमकिन है? आप

(अ.स.) ने फ़र्माया:

'यक़ीनन रसूले ख़ुदा (सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेह) ऐसे हालात में लोगों के सामने आए जब लोग पत्थरों, चट्टानों और लकड़ियों के तराशे हुए बुतों और मुजस्समों की परस्तिश करते थे और हमारा क़ाएम (अ.स.) जब क़याम करेगा और लोगों के सामने आएगा तो लोग पूरी किताबे ख़ुदा को उन (अ.स.) के बरख़ेलाफ़ तावील करेंगे और उन हज़रत (अ.स.) से (उन्हीं मफ़ाहीम) के ज़रीए बह्स करेंगे।

फिर हज़रत इमाम सादिक़ (अ.स.) ने फ़र्माया:

जान लो! ख़ुदा की क़सम उनका अ़द्ल व इन्साफ़ उनके घरों में इस तरह छा जाएगा जैसे गर्मी और सर्दी नुफ़ूज़ करती हैं।

(बाब १७, हदीस १)

तज़क्कुर

पत्थरों, चट्टानों और लकड़ियों के बुतों को मिस्मार करना आसान है बनिस्बत फ़िक्री व ज़ेह्नी व ख़याली व वह्मी बुतों के। आयात व रवायात की मनमानी तफ़सीर व तावील व तौजीह करने वाले होशियार रहें। जब इमामे ज़माना (अ.स.) ज़हूर फ़र्माएँगे तो ऐसे लोग उन हज़रत (अ.स.) से जंग के लिए खड़े हो जाएँगे।

अट्ठारहवाँ बाब

इस बाब में जो हदीसें जमा की गई हैं उनमें ख़ुरूजे सुफ़ियानी का ज़िक्र है। येह अम्र हत्मी है जो इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के क़याम से पहले ज़ाहिर होगा (लेकिन इसमें बदअ (बदा) भी वाक़ेअ हो सकती है)।

मुअ़ल्ला बिन ख़ुनैस ने कहा ''मैंने इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम को फ़र्माते हुए सुना:

'मिनल अम्रिल महतूमुन व मिन्हो मा लैसा महदूमिन व मिनल महदूमे ख़ुरूजुस्सुफ़ियानी फ़ी रजब'

(बाब १८, हदीस २)

उन्नीसवाँ बाब

परचमे रसूले ख़ुदा (सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेह) के बारे में हदीसें नक़्ल हुई हैं। येह वोह परचम है जिसे हज़रत अमीरुल मोअमेनीन (अ.स.) ने जंगे सिफ़्फ़ीन में उठाया था और फ़र्माया:

व इन्न हाज़ेही रायतुन ला यन्शोरोहा बा़दी इल्ललक़ाएमो सलवातुल्लाहे अ़लैहे

येह वह परचम है कि मेरे बाद अब इसको सिवाए क़ाएम (अ.स.) के कोई न उठाएगा।

(बाब १९, हदीस - १)

बीसवाँ बाब

इस बाब में इमामे ज़माना के असहाब की सिफ़तों पर मुश्तमिल हदीसें बयान हुई हैं। अल-मुन्तज़र के मुख़्तलिफ़ शुमारों में इन हदीसों को पेश किया गया है। क़ारेईन रुजू कर सकते हैं।

अच्छाइयों और नेकियों में सबक़त ले जाने वाले इमाम महदी (अ.स.) के असहाब में से होंगे। तमाम असहाबे इमाम जवान होंगे, बूढ़े नहीं होंगे लेकिन उनकी तअ़दाद आँखों में सुरमे की तरह और खाने में नमक की तरह होगी।

(बाब २०, हदीस ६,१०)

इक्कीसवाँ बाब

ज़हूर से पहले और ज़हूर के बाद शीओं के हालात क्या होंगे। इमाम सादिक़ (अ.स.) फ़र्माते हैं:

''जब क़ाएम ज़हूर करेगा तो जो अपने 'आप को इस अम्र का अह्ल समझेगा (ख़ुद को शीअ़ए इमामे ज़माना समझेगा) वोह इस अम्र से ख़ारिज हो जाएगा और इसके बरअक्स ऐसे अफ़राद जो सूरज और चाँद की पूजा करते होंगे वोह इस अम्र में दाखिल हो जाएँगे।

(बाब - २१, हदीस १)

तज़क्कुर

इस रवायत में बिल्कुल साफ़ है कि ख़ुद पर नाज़ न करे कि अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम का शीआ़ है और

इमामे ज़माना (अ.स.) का चाहने वाला है। अलबत्ता इस अज़ीम नेअमत को जो उसे मिली है सँभालकर रखे और हमेशा दुआए ग़रीक़ पढ़ता रहे कि वक़्ते नेज़ाअ विलायत का दामन हाथ से न छूटने पाए। इस बात पर तअज्जुब न किया जाए कि सूरज और चाँद की पूजा करने वाले कैसे इमाम के ख़ैमे में आ जाएँगे। तारीख़ गवाह है कि लम्हा भर में इधर का आदमी उधर हो जाता है। जनाब हुर (अ.स.) ने कैसे इमामे वक़्त को पहचान लिया और सब कुछ बदल गया।

बाईसवाँ बाब

इस बाब में वोह हदीसें नक़्ल हुई हैं जो येह बताती हैं कि इमामे ज़माना (अ.स.) नई दावत देंगे। इमाम सादिक़ (अ.स.) फ़र्माते हैं:

''जब क़ाएम क़याम करेगा तो नई दावत का आगाज़ करेगा जैसा कि रसूले ख़ुदा (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेह) ने दावत दी थी।''

अबू बसीर कहते हैं: मैं खड़ा हो गया और हज़रत इमाम सादिक़ (अ.स.) के सर को बोसा लिया और अर्ज़ किया: मैं गवाही देता हूँ कि आप दुनिया और आख़ेरत में मेरे इमाम हैं। आप (अ.स.) के दोस्त को दोस्त रखता हूँ और आप (अ.स.) के दुश्मन को दुश्मन रखता हूँ और गवाही देता हूँ कि आप (अ.स.) वलीए ख़ुदा हैं। हज़रत ने फ़र्माया:

रहेमकल्लाहो

ख़ुदा तुम पर रहमत करे।

तेईसवाँ बाब

इमामे ज़माना (अ.स.) की उम्र के बारे में रवायतें नक़्ल हुई हैं। यानी कमसिनी में आप मनसबे इमामत पर फ़ाएज़ हुए।

चौबीसवाँ बाब

येह बाब बड़ी ख़ासियत का हामिल है। इसमें वोह रवायतें नक़्ल हुई हैं जिन में इमाम सादिक़ (अ.स.) ने ऐसे ज़व्वार जो इमाम सादिक़ (अ.स.) के बाद उन के बड़े बेटे जनाब इस्माईल को उनका जानशीन समझते थे और हज़रत इमाम सादिक़ (अ.स.) ने उन्हें रद करते हुए साफ़ साफ़ फ़र्माया कि मेरे बाद मेरा फ़र्ज़ंद मूसा अमीन व इमाम होगा। रद्दे इस्माईल पर हदीसों को जमा किया गया है।

पच्चीसवाँ बाब

इस बाब में वोह हदीसें हैं जिन में बयान हुआ है कि जिस ने इमाम को पहचान लिया उसको कोई ज़रर व नुक़सान नहीं पहुँचेगा चाहे मारेफ़त हासिल करने में वह देर ही क्यों न करे।

छब्बीसवाँ बाब

येह आख़ेरी बाब है और इसमें इमाम महदी (अ.स.) की हुकूमत की मुद्दत को बयान किया गया है। जो इमाम सादिक़ (अ.स.) के फ़रमान के मुताबिक़ उन्नीस साल और कुछ माह की मुद्दत है।

ख़ुदाया! इमामे ज़माना (अ.स.) के ज़हूर में तअजील फ़र्मा और क़ल्बे मुबारके हज़रत ज़हरा (स.अ.) को सुकून मुयस्सर फ़र्मा। आमीन।

अक़ीदए इमाम महदी (अ.स.) और ओलमाए अहले सुन्नत

हर ज़माने का एक मख़सूस इमाम है। कुछ लोग इमाम से मुराद क़ुरआने करीम को लेते हैं तो कुछ लोग किसी और को। क़ुरआने करीम किसी एक ज़माने की किताब नहीं बल्कि येह हर ज़माने के लिए है।

ज़माने के इमाम की बह्स और भी ज़रुरी हो जाती है जब सूरा बनी इसराईल की आयत ७१ का मुतालेआ करते हैं कि

यौमा नद्ऊ कुल्ला ओनासिन बे इमामेहिम

''जिस दिन हम हर एक को उसके इमाम के साथ आवाज़ देंगे (महशूर करेंगे)।''

और इसी के ज़ैल में जब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की मशहूर व मारूफ़ हदीस का मुतालेआ करते हैं जिसको मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में शीआ और सुन्नी मोहद्देसीन ने नक़्ल किया है।

''जो शख़्स अपने इमामे वक़्त की मारेफ़त के बग़ैर इस दुनिया से चला जाए तो उसकी मौत जाहिलीयत की मौत होगी।''

इस अहम अक़ीदे के बारे में बाज़ लोगों का येह ख़याल है कि हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का अक़ीदा सिर्फ़ शीओं का अपनी तस्कीने क़ल्ब के लिए एक गढ़ा हुआ अक़ीदा है जो उन्होंने तारीख़ में शिक्स्त से दो-चार होने के बाद तैयार किया।

लोगों के तन्ज़ ने हमें मजबूर किया कि हम देखें कि क्या वाक़ई अक़ीदए महदी ख़ालिस शीई अक़ीदा है या दूसरे फ़िर्क़ों में भी येह अक़ीदा पाया जाता है।

जब हम दूसरे मकातिबे फ़िक्र के ओलमा की किताबों का मुतालेआ करते हैं तो वाज़ेह होता है कि उनकी मोतबर किताबें अक़ीदए महदी से न सिर्फ़ भरी हुई हैं बल्कि वोह इसे एक ख़ालिस इस्लामी अक़ीदा क़रार देती हैं और उनमें वारिद होने वाली अहादीस को मुतवातिर तसलीम करते हैं।

अक़ीदए इमाम महदी अलैहिस्सलाम और क़ुरआने करीम

ले युज़हेरहू अलद्दीने कुल्लेही व लौ करेहल मुश्रेकून

ताकि उसे दीगर तमाम (दीनों पर) ग़ालिब करे गरचे मुश्रेकीन बुरा ही क्यों न मानें।

(सूरए तौबा: ३३)

इस आयत की तफ़सीर में जनाब सईद बिन ज़ुबैर (र.अ.) फ़र्माते हैं कि इस से मुराद हज़रत फ़ातेमा ज़हरा अलैहिस्सलाम की नस्ल से हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम हैं।

इसकी येह तफ़सीर जनाब हाफ़िज़ गंजी शाफ़ई ने अपनी किताब अल-बयान फ़ी अख़्बारे साहिबिज़ ज़मान के बाब २५, सफ़हा १५५ और शिबलन्जी ने नूरुलअब्सार के सफ़हा १८६ पर नक़्ल किया है। इसके अलावा हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम से मन्क़ूल रिवायतों की रोशनी में और भी बहुत सी आयतों की तफ़सीर हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के ज़ुहूर से मुतअल्लिक़ की गई हैं जैसा कि जनाब शेख़ सुलेमान क़ुन्दूज़ी हनफ़ी (वफ़ात १२९३ हिजरी) ने अपनी गराँक़द्र किताब ''यनाबीउल मवद्दत'' का ७१ वाँ बाब उन आयतों पर क़ाएम किया है जो इमाम महदी अज्जलल्लाहो तआला फ़रजहुश्शरीफ़ और आपके अस्हाब के बारे में नाज़िल हुई हैं। मिनजुम्ला और रिवायतों के एक रिवायत सूरए अंबिया की आयत नंबर १०५ के ज़ैल में इमाम मोहम्मद

बाक़िर अ़लैहिस्सलाम और इमाम जाफ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से नक़्ल करते हुए फ़र्माते हैं येह आयत जिसका तर्जुमा होता है:

''और हमने तौरात के बाद ज़बूर में लिख दिया है कि ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे।''

यहाँ नेक बन्दों से मुराद क़ाएम और उनके अस्हाब हैं।

इसी तरह फ़ुसूलुल मोहिम्मा में इब्ने सब्बाग़ मालिकी फ़स्ल १२, सफ़हा ३४५ में सूरए ज़ुख़रुफ़ आयत ६१ के ज़ैल में फ़र्माते हैं कि:

''महदी अ़लैहिस्सलाम वोह हैं जो आख़िरी ज़माने में होंगे और उनके ज़ुहूर के बाद क़यामत और उसकी अलामतें ज़ाहिर होंगी। यानी इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम का ज़ुहूर क़यामत के नज़दीक होगा।

इसी तरह की रिवायत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द ने हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से नक़्ल की है जिसे अबू सईद ख़ुदरी और अबू हुरैरा ने भी नक़्ल किया है और उनका इन्दराज मुसनदे अहमद १/३७६, सुनने तिर्मिज़ी, जिल्द ६, किताब ३४, बाब ५२, हदीस २२३१, सफ़हा ५०५ और मजमऊ़ज़्ज़वाएद (हैसमी, ७/३१५) में किया है, ''क़यामत उस वक़्त तक न आएगी जब तक कि मेरे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम में से एक शख़्स ज़ाहिर न हो जो मेरा हमनाम होगा। यानी क़यामत का आना यक़ीनी है और इस हदीस की रोशनी में जब तक इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम का ज़ुहूर न होगा उस वक़्त तक क़यामत न आएगी।

इस बेना पर हम कह सकते हैं कि क़यामत की तरह हज़रत का ज़ुहूर भी यक़ीनी और लाज़िमी है।

सूरए शूरा आयत १८,

''वोह लोग जो क़यामत में शक करते हैं वोह खुली गुमराही में हैं''

के ज़ैल में यनाबीउ़लमवद्दत, बाब ७१/४२५, मतबूआ इसतंबूल, में मुफ़ज़्ज़ल से रिवायत नक़्ल की है कि, ''जब मुफ़ज़्ज़ल ने इस आयत के मानी इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से दर्याफ़्त किए तो इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़र्माया:

मुतशक्किक लोग पूछेंगे के आप (अ.स.) (महदी अ.स.) कब पैदा हुए? आप (अ.स.) को किसने देखा? आप (अ.स.) इस वक़्त कहाँ हैं? आप (अ.स.) कब ज़ाहिर होंगे? तो ऐ मुफ़ज़्ज़ल येह सब बातें ख़ुदा वन्द आलम की क़ज़ा व क़द्र में शक के मानिन्द हैं। और येह वोह लोग हैं जो दुनिया और आख़ेरत में नुकसान उठाएँगे। इसी तरह की दूसरी रिवायत सुदैर सैरफ़ी से मिलती है, ''तूलानी ग़ैबत की बेना पर लोग इन्कार करने लगेंगे और गुमराही की बात करने लगेंगे कि अभी वोह पैदा ही नहीं हुए, या कुछ कहेंगे के आप (अ.स.) पैदा हुए और मर गए। कुछ कहेंगे ग्यारहवें इमाम अ़लैहिस्सलाम की कोई औलाद ही नहीं थी... कुछ कहेंगे कि हज़रत क़ाएम अ़लैहिस्सलाम की रूह किसी दूसरे जिस्म में रख दी गई है। येह सब नामुनासिब, नाज़ेबा और इख़्तेलाफ़ी बातें बातिल हैं। यही रिवायत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द ने हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से नक़्ल की है।

इसी से मिलती जुलती रिवायत लेसानुलमीज़ान, इब्ने हजरे अस्क़लानी, ५/११३० और जनाब जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह हज़रत रसूले ख़ुदा सलल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि ''जिसने हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के ज़ुहूर का इन्कार किया उसने तमाम बातों से कुफ़्र किया जो मोहम्मद (स.अ.व.अ.) पर नाज़िल हुई हैं।''

मुन्दर्जा बाला रिवायतों से येह ज़ाहिर होता है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम से मुतअ़ल्लिक़ जिस तरह के इख़्तेलाफ़ात के पेशीनगोई की थी वोह हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह साबित हुई।

हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम का इन्कार इसलिए कुफ़्र क़रार दिया गया है क्योंकि हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम का अ़क़ीदा ख़ालिस इस्लामी उसूल में से एक है। और आयात व रिवायात में इसका तज़केरा मौजूद है। अब अगर इसके बाद भी कोई शख़्स अ़क़ीदए इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम का इन्कार करे तो वोह इस्लाम से ख़ारिज है। ख़ुदा वन्दआलम हम सब को आख़िरी ज़माने की गुमराही से महफ़ूज़ रखे।

आइए अब हम देखें के येह अहादीस मुतवातिर हैं या नहीं या इनके तवातुर के बारे में दूसरे फ़िर्क़ों की किताबों में क्या ज़िक्र मिलता है।

इस सिलसिले में सवाएकुल मोहरेक़ा, बाब ११, किताब १, सफ़हा २५४ में अबुल हसन आबुरी से रिवायत की है कि येह रिवायतें मुतवातिर हैं और रावियों की अकसरीयत ने हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से रिवायतें नक़्ल की हैं।

''वोह ज़ाहिर होंगे और वोह आप (स.अ.व.अ.) के अह्ले बैत (अ़लैहिमुस्सलाम) में से होंगे और वोह ज़मीन से ज़ुल्म व नाइन्साफ़ी को ख़त्म करते हुए एक आ़दिल हुकूमत का क़याम फ़र्माएँगे। और उनके ज़माने में हज़रत ईसा (अ.स.) ज़ाहिर होंगे और उन (अ.स.) का दौर, हज़रत ईसा (अ.स.) की वापसी का दौर होगा और हज़रत ईसा (अ.स.) आपके पीछे नमाज़ पढ़ेंगे।

अबुल हसन आबुरी अह्ले सुन्नत के बुज़ुर्ग मर्तबा आ़लिम हैं। आपका पूरा नाम मोहम्मद बिन हुसैन बिन इब्राहीम आबुरी सजिस्तानी (वफ़ात ३६३ हिजरी) है। मनाक़िबुश्शाफ़ई आपकी मशहूर किताब है।

अल मुक़द्दमा में इब्ने ख़ल्दून, सफ़हा ३६७ पर लिखते हैं कि ''तमाम अह्ले इस्लाम के नज़दीक़ येह बात हर ज़माने में शोहरत की हामिल रही है कि आख़िरी ज़माने में एक शख़्स का ज़ुहूर ज़रूरी है जो आप (अ.स.) की अह्ले बैत (अ़लैहिमुस्सलाम) में से होगा। जो दीन के लिए एक सुतून की मानिन्द होगा, अ़द्ल व मसावात को आम करेगा, मुसलमान उसकी पैरवी करेंगे वोह तमाम इस्लामी मुमालिक पर तसल्लुत पाएगा और उसका नाम महदी (अ़लैहिस्सलाम) होगा।

हंबली मसलक के फ़क़ीह जनाब शम्सुद्दीन मोहम्मद सफ़्फ़ारीनी (१११४-११८८) अपनी नज़्म ''अद्दुर्रतुल - मुज़ीअ़ता फ़ी अ़क़ीदतिल फ़िर्क़तिल मर्ज़ीया'' में हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के अ़क़ीदे और उनके ज़ुहूर के मुतअ़ल्लिक फ़र्माते हैं कि:

''क़यामत की अलामत के बारे में जो कुछ क़ुरआन व हदीस में आया है वोह सब हक़ है उसमें कोई शक व शुबहा नहीं।''

इसके बाद इस तरह फ़र्माते हैं कि, ''हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के ज़ुहूर के बारे में इस क़द्र रिवायतें हैं जो मअ़नवी तवातुर की हद तक हैं और येह बात अ़ोलमाए अह्ले सुन्नत वलजमाअ़त के नज़दीक इस क़द्र मशहूर है कि उनका एक अ़क़ीदा शुमार किया जाता है। इस बेना पर हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम पर ईमान लाना वाजिब है और येह बात अह्ले इल्म के नज़दीक बिल्कुल मुसल्लम है और यही सूरते हाल शीअ़ों के नज़दीक भी है।''

अभी तक के मुतालेआ से हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं के अ़क़ीदए महदी एक ख़ालिस इस्लामी अ़क़ीदा है और इसका इन्कार करने वाला काफ़िर है, वोह चाहे जिस नीयत से करे। और रिवायतें और अहादीस जो इस अ़क़ीदे के मुतअ़ल्लिक़ नक़्ल हुई हैं वोह सब की सब तवातुर की हद तक हैं। आइये अब हम येह मालूम करें के इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम किस नस्ल से होंगे और रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के अह्ले बैत (अ़लैहिमुस्सलाम) से मुराद कौन लोग हैं?

अ़र्फ़ुल वर्दी फ़ी अख़बारिल महदी, २/१६६ और जामेउ़ल वामेअ़ १/५ में आबुरी से रिवायत है कि इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ.स.) ने जनाब अ़ली बिन हुसैन ज़ैनुल आबिदीन अ़लैहिस्सलाम से और उन्होंने अपने वालिद (अ़लैहिस्सलाम) से और उन्होंने जनाब फ़ातेमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा से येह रिवायत नक़्ल फ़र्माई है कि:

''हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़र्माया: ऐ फ़ातेमा! मैं तुम्हें महदी की बशारत देता हूँ, वोह तुम्हारी नस्ल से है।''

येह रिवायत हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्लाम की फ़ज़ीलत को भी वाज़ेह करती है। क्योंकि पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने येह बात जनाब फ़ातेमा अलैहस्सलाम के लिए बाइसे फ़ख़्र क़रार दी है कि हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम उनकी नस्ल से हैं।

मज़ीद बरआँ वोह हदीसे क़ुद्सी जो इमाम महदी (अ.स.) के बारे मैं है जिसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी

(र.अ.) ने लौहे फ़ातेमी पर लिखा हुआ देखा और जिसे एक आ़लिम ने नेहायत वज़ाहत और सराहत के साथ इस तरह बयान फ़र्माया है:

जनाबे जाबिर ने कहा: मैं ख़ुदा को गवाह क़रार देता हूँ कि मैंने लौह पर ये तहरीर देखी है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ख़ुदा वन्द आ़लम, हकीम की जानिब से येह मकतूब है अपने नूर, अपने सफ़ीर, अपने हिजाब और अपनी दलील, मोहम्मद के लिए। जिब्रईल अमीन इस लौह को ख़ुदा की जानिब से लाए हैं। मैंने किसी नबी को मबऊस नहीं किया और उसकी मुद्दत मुकम्मल नहीं की और उसका वक़्त पूरा नहीं किया मगर येह कि उसका एक वसी ज़रुर क़रार दिया। मैंने आप (स.अ.व.अ.) को तमाम अंबिया पर फ़ज़ीलत दी है और आप (स.अ.व.अ.) के वसी को तमाम औसिया पर फ़ज़ीलत दी है और उन (अ़ली (अ.स.)) के बाद आप (स.अ.व.अ.) के चहीतों और नवासों और हुसैन अ़लैहिस्सलाम के ज़रीए आप (स.अ.) को बुज़ुर्गी अता की, उनकी इतरत से मोहब्बत की बुनियाद पर लोगों को सवाब दूँगा और नफ़रत की बुनियाद पर अ़ज़ाब में मुब्तेला करूँगा।

उनमें पहले अ़ली सैयदुल आ़बिदीन अ़लैहिस्सलाम जो गुज़श्ता औलिया की ज़ीनत हैं उनके बाद उनके फ़र्ज़न्द मोहम्मद (बाक़िर) हैं जो मेरे इ़ल्म को फैलाएँगे और मेरी हिकमत के ख़ज़ानादार हैं। जाफ़र अ़लैहिस्सलाम के बारे में इन्कार करने वाले हलाक हो जाएँगे। मैं जाफ़र अ़लैहिस्सलाम की मन्ज़ेलत को बलन्द करूँगा। उनको उनके शीओं, अन्सार और उनके दोस्तों के सिलसिले में खुशनूद करूँगा। उनके बाद मैंने मूसा अ़लैहिस्सलाम को मुन्तख़ब किया है। अगर उनमें से किसी एक का भी किसी एक ने इन्कार किया तो उसने मेरी नेअ़मत का इन्कार किया। और जो आठवें (वली) का इन्कार करेगा उसने मेरे तमाम औसिया का इन्कार किया और यक़ीनन अ़ली (रज़ा) अ़लैहिस्सलाम मेरे वली और नासिर हैं मुझ पर लाज़िम है कि उनके फ़र्ज़न्द मोहम्मद (तक़ी) के ज़रीए उनकी आँखों को ठंडक फ़राहम करूँ जो उनके बाद उनके जानशीन हैं। वोह मेरे इ़ल्म के वारिस और मेरी हिकमत के ख़ज़ानादार हैं।

उनके बाद उनके फ़र्ज़न्द अ़ली (नक़ी) हैं जो मेरे वली व नासिर हैं उन पर सआ़दत का ख़ात्मा करूँगा। उनके सुल्ब से अपने रास्ते की तरफ़ दावत देने वाला और अपने इ़ल्म के ख़ज़ानादार हसन अ़लैहिस्सलाम को ज़ाहिर करूँगा। फिर इस सिलसिले को उनके फ़र्ज़न्द 'मीम हे मीम दाल' जो आ़लमीन के लिए रहमत हैं, के ज़रीए कामिल करूँगा। यही हज़रात यक़ीनन मेरे सच्चे औसिया हैं। उनके ज़रीए मैं घटाटोप फ़ित्नों को दूर करूँगा। मैं उनके ज़रीए लग़ज़िशों की इस्लाह करूँगा। उनके ज़रीए लोगों को क़ैद-ओ-बन्द से रिहाई अ़ता करूँगा। इन्हीं लोगों पर उनके दीन की जानिब से मुसलसल दुरूद व रहमत है। हक़ीक़तन यही लोग हिदायत याफ़्ता हैं और इन्सानियत की रहनुमाई का मीनारए नूर हैं।

(फ़राएदुस सिमतैन, शैख़ुल इस्लाम हमूई शाफ़ई, बाब २/१३७-१३९)

येह हदीस गराँक़द्र अहादीस में शामिल है। इसमें बेशुमार फ़वाएद व नुकात हैं। इस हदीस में हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बारह जानशीनों का बाक़ाएदा तआ़रुफ़, उनके नाम व ख़ुसूसियात के साथ कराया गया है। येह वही बारह ख़ोलफ़ा हैं जिनका तज़केरा जाबिर (र.अ.) की बयान कर्दा रिवायत में मौजूद है जो बहुत मुसद्देक़ा है। इस हदीस का तज़केरा सिहाहे सित्ता में किया गया है।

बारगाहे एज़दी में शब-ओ-रोज़ मशग़ूले दुआ़ हैं कि वोह हमारे महबूब इमाम के ज़ुहूर में ताजील फ़र्माए।

आमीन या रब्बल आ़लमीन।

शैख़ मुर्तज़ा अन्सारी (र.अ.) और इमामे ज़माना (अ.स.)

उस तीनते फ़ाज़िला का क्या कहना कि जिसने ख़ुद को न सिर्फ़ येह कि मसदरे नूर से क़रीब किया बल्कि अपने मुकम्मल वुजूद को उसके साये में परवान चढ़ाया। येह नूर कोई आम नूर नहीं बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम का मुक़द्दस नूर है कि जिसके गिर्द येह परवाना तवाफ़ करता रहा यहाँ तक कि येह रसूले अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के सलाम का हामिल बना जिसे आप (स.अ.व.अ.) के पाँचवें जानशीन तक पहुँचाया।

जी हाँ! मेरी मुराद आँहज़रत सल्लल्लहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के अ़ज़ीम व गराँक़द्र सहाबी जनाब जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी (र.अ.) से है जिन्होंने अपने मुकम्मल वुजूद को ख़ानदाने इ़स्मत व तहारत की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर दिया था।

येह दुनिया का दस्तूर है कि जब किसी को कोई नुमायाँ फ़त्ह व कामियाबी हासिल होती है तो लोग उसके बुज़ुर्गों को याद किया करते हैं कि येह फ़लाँ का बेटा है, फ़लाँ का पोता है। इसी रविश के तह्त येह ज़रुरी समझा कि जब अ़ल्लामा शैख़ मुर्तज़ा अन्सारी (र.अ.) का तज़केरा हो तो क्यों न उसकी तमहीद उनके जद जनाब जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी (र.अ.) से हो।

दर हक़ीकत येह उनके ख़ून की पाकीज़गी ही थी कि उनकी नस्ल से ऐसा फ़र्ज़न्द पैदा हुआ कि जिसने शीअ़त को तक़वीयत दी। और मुजतहेदीन के सिलसिले में ऐसा नुमायाँ मक़ाम हासिल किया कि आज आपको ख़ातमुल मुजतहेदीन के नाम मे याद किया जाता है। वाक़ेअ़न ऐसा लगता है कि ख़ानदाने इ़स्मत की ख़िदमत व नुसरत करना शैख़ मुर्तज़ा (र.अ.) को अपने अजदाद से विरसे में मिला है। जब हम आपकी ज़िन्दगी का मुतालेअ़ा करते हैं तो पता चलता है कि आपकी पूरी ज़िन्दगी दीनी ख़िदमात और इमामे वक़्त की नुसरत से मालामाल है।

हम यहाँ शैख़ मुर्तज़ा (र.अ.) की बलन्द पाया शख़्सीयत का तअ़ारुफ़ कराते हुए कुछ बुनियादी हक़ाएक़ पर रौशनी डालेंगे।

विलादत

येह आपकी फ़ज़ीलत है कि आपकी विलादत इस्लाम की अ़ज़ीम ईद, ईदे ग़दीर के रोज़ १२१४ हिजरी में दज़फ़ूल शहर में वाक़ेअ़ हुई। आपके वालिद अ़ल्लामा शैख़ मोहम्मद अमीन थे जिनका शुमार बुज़ुर्ग अ़ोलमा में किया जाता है। आपकी वालिदा एक बलन्द मर्तबा आ़लिम की दुख़्तर थीं। अपने ज़माने की परहेज़गार अह्ले इ़ल्म व मुख़लिस औरत थीं।

ख़ुसूसियत व शख़्सीयत

शैख़ अन्सारी (र.अ.) की इ़ल्मी नश्वो नुमा (नश्व व नुमा) के मुतअ़ल्लिक़ मज़कूर है कि आपने ५ साल के सिन में क़ुरआन सीखा और फिर दीगर उ़लूम जैसे अदबीयात, सर्फ़ व नह्व, मआ़नी व बयान, मन्तिक़ व कलाम और उ़लूमे अ़क़्ली हासिल करने में मश्ग़ूल हुए। यहाँ तक कि आपने इन उ़लूम में महारत हासिल कर ली। इन मराहिल को तै करने के बाद आपने फ़िक़्ह व उसूल पर ऐसी ख़ास तवज्जोह और मेहनत की कि १६ साल के सिन में दर्जए इजतेहाद पर फ़ाएज़ हुए। आपका मैदाने इ़ल्म व अ़मल में एक अहम किरदार रहा जिसका असर आज भी अ़ोलमा के दरमियान

आश्कार है।

शैख़ अन्सारी (र.अ.) की इल्मी शख़्सीयत एक अ़ज़ीम मक़ाम की हामिल है। आपके मुतअ़ल्लिक़ तारीख़ में कसीर वाक़ेआ़त मिलते हैं जिनसे आपकी नुमायाँ शख़्सीयत का अन्दाज़ा होता है। यहाँ हम इख़्तेसार से काम लेते हुए मुख़्तसरन बयान कर रहे हैं।

आपके उस्ताद मरहूम शैख़ अ़ली जो शैख़ जाफ़र काशिफ़ुलग़ेता के फ़र्ज़न्द थे आपके मुतअ़ल्लिक़ फ़र्माते हैं:

कुल्लो शैइन समाओहू अ़अ़ज़मो मिन अ़यानेही इल्ला शैख़ोकुम शैख़ो मुर्तज़ा फ़ इन्ना अ़यानहू अ़अ़ज़मो मिन समाएही।

हर शै का सुना जाना उसके देखे जाने से अ़ज़ीमतर होता है सिवाए तुम्हारे शैख़, शैख़ मुर्तज़ा के, क्योंकि यक़ीनन उनका देखना उनके मुतअ़ल्लिक सुने जाने से अ़ज़ीमतर है।

(फ़ोक़हाऐ नामदारे शीआ़, सफ़हा: ३२९, शख़्सीयते शैख़ अन्सारी, सफ़हा: ४)

मरहूम हाज मिर्ज़ा हबीबुल्लाह रश्ती जो कि शैख़ मुर्तज़ा (र.अ.) के सौ (१००) आ़लिम व मुजतहिद शागिर्दों के दरमियान मुमताज़ शागिर्द थे, जब शैख़ अपना दर्स तमाम करते तब मिर्ज़ा रश्ती दर्स की, दूसरों के लिए वज़ाहत किया करते थे। आप अपने उस्ताद शैख़ के मुतअ़ल्लिक़ फ़र्माते हैं:

होवा तालिलइ़ल्मते इ़ल्मन व अ़मलन।
आप (शैख़ मुर्तज़ा (र.अ.)) मक़ामे इ़ल्म व अ़मल में मक़ामे इस्मत के क़रीब हैं।

(बदायेउ़ल अफ़्कार, सफ़हा: ४५७)

आपसे ज़ाहिर होने वाले ऐसे बहुत से करामात हैं जो किताबों में मज़कूर हैं।

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से राबेता

जैसा कि हमने बयान किया कि शैख़ मुर्तज़ा ने अपनी तमाम ज़िन्दगी अपने मौला व आक़ा हज़रत हुज्जत अर्वाहोना लहुल फ़िदा की ख़िदमत में सर्फ़ की, इस हद तक कि अपनी शख़्सीयत को मन्ज़िले कमाल तक पहुँचाया, ऐसा कमाल कि जो तमाम रूहानी व जिस्मानी सिफ़तों से मालामाल था। आपने दौरे ग़ैबत की अहम ज़िम्मेदारियों को अदा किया और इमाम अ़लैहिस्सलाम की ख़ुश्नूदी हासिल की। येह आपके नफ़्स की पाकीज़गी, ख़ालिस अ़मल और दीनी ख़िदमात का जज़्बा और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की ख़ालिस मोहब्बत ही थी कि आपको तशर्रुफ़े इमामे अस्र अ़लैहिस्सलाम का अ़ज़ीम मर्तबा हासिल हुआ। मरहूम शैख़ महमूद इराक़ी जो आपके शागिर्द थे, शैख़ को उन बुज़ुर्ग लोगों की फ़ेहरिस्त में शुमार करते हैं जो इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत मे हाज़िर हुए हैं और शैख़ अन्सारी (र.अ.) का ज़िक्र इस तरह करते हैं:

उनमें से सातवें शैख़ोनलअ़ज़म व उस्तादोनल इफ़ख़म व सनादोनल अकरम अश्शैख़ मुर्तज़ा अल तस्तरी अल अन्सारी क़ुद्देसा सिर्रहू हैं।

शैख़ मुर्तज़ा (र.अ.) के अपने बहुत से वाक़ेआ़त व करामात वारिद हुए हैं जो इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से शरफ़े मुलाक़ात का तज़केरा करते हैं। यहाँ हम सिर्फ़ दो वाक़ेआ़त का तज़केरा कर रहे हैं:

१. आक़ा मीर सैयद मोहम्मद बहबहानी, शैख़ के एक शागिर्द के ज़रीए से नक़्ल करते हैं कि कर्बलाए मोअ़ल्ला में आधी रात गुज़र गई तो हम्माम के वास्ते बाहर निकला। चूँकि बाहर बहुत अँन्धेरा था लिहाज़ा चराग़ मेरे हाथ में था, मैंने कुछ फ़ासिले पर एक शख़्स को देखा। जैसे ही कुछ क़रीब हुआ पता चला शैख़ अन्सारी (र.अ.) हैं।

आपको देख कर मेरी परेशानी बढ़ गई कि इतनी रात में ज़ईफ़ चश्म से इस तारीकी में आख़िर आप कहाँ जा रहे हैं। आहिस्ता आहिस्ता मैंने आपका पीछा करना शुरू किया। आप चलते चलते एक मकान के किनारे खड़े हो गए और उसके दरवाज़े पर ज़ियारते जामेआ़ को एक ख़ास तवज्जोह से पढ़ी और फिर अन्दर दाख़िल हुए। मैंने और सब चीज़ें तो न देखीं, हाँ शैख़ की आवाज़ सुनी जैसे

किसी से गुफ़्तुगू कर रहे हैं। पस मैं हम्माम गया और हरमे मुतह्हर की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ। इस मुसाफ़िरत के बाद नजफ़े अश्रफ़ में जब शैख़ की ख़िदमत में पहुँचा तो उस शब के मुतअल्लिक़ दर्याफ़्त किया। इब्तेदा में आपने इन्कार किया लेकिन जब मैंने ज़ियादा इसरार किया तो फ़र्माया:

जब इमामे अस्र अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होने की इजाज़त तलब कर ली और उस मंज़िल के किनारे (जो तुझे पता न चला) गया और ज़ियारते जामेआ पढ़ी। दूसरी मर्तबा इजाज़त मिली और हज़रत (अ.स.) की ख़िदमत में शरफ़याब हुआ और अहम मसाएल के हल दर्याफ़्त किए और आप (अ.स.) ने उससे मुतअल्लिक़ जवाबात इ़नायत फ़र्माए। इसके बाद शैख़ ने मुझसे अ़ह्द लिया कि जब तक मैं ज़िन्दा हूँ इस वाक़ेए़ को मख़्फ़ी रखना और किसी से बयान न करना।

(ज़िन्दगानी व शख़्सीयते शैख़ अन्सारी, सफ़हा १०६, इनायते हज़रत महदिए मौऊ़द ब अ़ोलमा व मराजेअ़ तक़लीद, सफ़हा ८७)

२. शैख़ मुर्तज़ा की ज़िन्दगी के हालात में एक दिलचस्प वाक़ेआ मिलता है। जब आयतुल्लाहुलउ़ज़्मा हाज शैख़ मोहम्मद हसन साहेबे जवाहिर रहमतुल्लाह अ़लैह की वफ़ात के बाद लोगों ने शैख़ मुर्तज़ा को मरजए़ तक़लीद मुअय्यन कर लिया। और आप से रिसालए अ़मलिया, तौज़ीहुलमसाएल तलब की, शैख़ अन्सारी ने फ़र्माया कि सैयदुल अ़ोलमा माज़न्दरानी की मौजूदगी में मेरे पास तौज़ीहुल मसाएल नहीं है। वोह मुझसे अअ़लम हैं और वोह बाबुल में क़याम पज़ीर हैं, मैं मरजईयत क़ुबूल नहीं करूँगा।

शैख़ अन्सारी (र.अ.) ने सैयदुल अ़ोलमा को जो बाबुल में मोक़ीम थे एक ख़त तहरीर फ़र्माया। उसमें इल्तेजा की कि आप नजफ़े अशरफ़ तशरीफ़ लाएँ। और हौज़ए इ़ल्मिया शीआ की ज़ेअ़ामत व क़ेयादत क़ुबूल करें। सैयदुल अ़ोलमा ने शैख़ अन्सारी (र.अ.) के ख़त का जवाब दिया:

येह दुरुस्त है कि जब मैं नजफ़े अशरफ़ में था आपके साथ मुबाहेसा करता था तो फ़िक़्ह में मैं आपसे ज़ियादा क़वी था लेकिन अब काफ़ी मुद्दत से मैं बाबुल में क़याम पज़ीर हूँ। दर्स व तदरीस का सिलसिला नहीं है। बह्स व मुबाहेसा छोड़ चुका हूँ। इस बेना पर आपको अब अपनी ज़ात से अअ़लम जानता हूँ इसलिए मरजईयत आप ख़ुद क़ुबूल फ़र्माएँ।

शैख़ अन्सारी (र.अ.) ने इसके बावजूद फ़र्माया कि मैं अपने आपको इस मक़ाम व मनसब के क़ाबिल नहीं समझता।

अगर मेरे मौला व आक़ा हज़रत इमाम वलीये अस्र अ़लैहिस्सलाम मुझे इजाज़ए इजतेहाद इ़नायत फ़र्माएँ और मुझे इस मक़ाम व मनसब के लिए मुअय्यन करें तो मैं क़ुबूल करूँगा।

हस्बे मामूल शैख़ अन्सारी (र.अ.) एक रोज़ अपने शागिर्दों के सामने बैठे दर्स दे रहे थे कि एक ऐसी शख़्सीयत जिसके चेहरए बशर से अ़ज़मत व जलालत के आसार ज़ाहिर हो रहे थे ज़ाहिर हुई। आपने शैख़ मुर्तज़ा (र.अ.) से मुख़ातिब हो कर सवाल किया:

एक अ़ौरत जिसका शौहर मस्ख़ हो गया हो उसके बारे में आपकी क्या राय है? (येह मसअला किसी किताब में भी तहरीर नहीं किया गया इसलिए कि इस उम्मत में मस्ख़ का वुजूद नहीं है।)

इस बेना पर शैख़ अन्सारी ने कहा:

चूँकि फ़िक़्ह की किताबों में येह मसअला बयान ही नहीं किया गया लेहाज़ा मैं जवाब देने की ताक़त नहीं रखता। उस शख़्स ने पूछा:

अब आप फ़र्ज़ करें कि इस उम्मत में एक ऐसा वाक़ेआ रूनुमा हुआ है एक अ़ौरत का शौहर मस्ख़ हो गया है, वोह अ़ौरत क्या करे।

शैख़ अन्सारी (र.अ.) ने कहा:

मेरी राय (फ़त्वा) येह है कि अगर मर्द हैवानात की शक्ल पर मस्ख़ हुआ है तो उसकी अ़ौरत को चाहिए कि इ़द्दए तलाक़ गुज़ारे। और इस मुद्दत के बाद निकाह कर सकती है चूँकि उसका शौहर ज़िन्दा है और रूह भी रखता है। लेकिन अगर उसका शौहर जमादात की सूरत में मस्ख़ हुआ है तो उसकी अ़ौरत इ़द्दए वफ़ात गुज़ारे इस लिए कि उसका शौहर मुर्दा की सूरत एख़्तेयार कर गया है। इस

मुद्दत के बाद अक़्द कर सकती है।

उस शख़्स ने तीन मर्तबा फ़र्माया:

अन्तलमुजतहिद, अन्तलमुजतहिद, अन्तलमुजतहिद

आप मुजतहिद हैं, आप मुजतहिद हैं, आप मुजतहिद हैं।

इसके बाद आप दर्स की मजलिस से उठे और बाहर चले गए। शैख़ अन्सारी (र.अ.) जानते थे कि वोह हज़रत वलीए अस्र अलैहिस्सलाम थे और उन्होंने इजाज़ए इजतिहाद एनायत फ़र्माया है इसलिए फ़ौरन अपने शागिर्दों को आपकी तलाश में भेजा। शागिर्द उसी वक़्त उठे और इधर उधर दौड़ते रहे मगर किसी ने इमाम अलैहिस्सलाम को न पाया। इसके बाद से शैख़ अन्सारी (र.अ.) इस बात पर आमादा हुए कि लोगों को तौज़ीहुल मसाएल पेश करें ताकि लोग उनकी तक़लीद करें।

(नक़्ल अज़ किताब गंजीनए दानिशमन्दान, जिल्द ८)

इन वाक़ेआत से येह बात वाज़ेह होती है कि इस दौरे ग़ैबत में इमाम अलैहिस्सलाम की मराजेअ तक़लीद पर एक ख़ास एनायत रहती है, आप (अ.स.) उनकी पुश्त पनाही करते हैं।

तालीफ़ात

आपकी तालीफ़ात में ऐसी कसीर किताबें हैं जो हौज़ए इल्मिया में तदरीस की बुनियाद हैं। आपके फ़िक़्ही और उसूली आसार तलबा के लिए राहे हिदायत हैं। यहाँ हम इख़्तेसार की बेना पर कुछ का तज़केरा करते हैं:

१. अल इजतेहाद वत्तक़लीद
२. उसूलुल फ़िक़्ह
३. तक़लीदुल मैयित वल अअलम
४. अत्तक़य्या
५. अल हाशिया अला क़वानीनिल उसूल
६. अल-ख़ुम्स
७. मनासिके हज्ज
८. सलातुल जमाअत
९. अल-ग़स्ब
१०. अल फ़वाएदुल उसूलिया
११. अल-मुतअ
१२. अल-मकासिब
१३. अन्निकाह
१४. अल वसीयतो व अहकामोहा
१५. फ़राएदुल उसूल (रसाएल)

वफ़ाते शैख़

बिलआख़िर येह शेहाबे साक़िब कि जिसने आसमाने फ़िक़ाहत को मुनव्वर किया जब ६८ साल गुज़रे तो हक़ तआला की आवाज़ पर लब्बैक कहता हुआ शबे शन्बा अट्ठारह जमादिउस्सानी १२८१ हिजरी को इस दारे फ़ानी से दारे बक़ा की तरफ़ कूच कर गया।

इन्नालिल्लाहे व इन्ना एलैहे राजेऊन

ये हदीस आपके मुतअल्लिक साबित आती है कि:

इज़ा मातलआलिमो सलोमा फ़िलइस्लामे सुल्मतन ला यसुद्दोहा शैऊन एला यौमिल क़ियामते।

जब किसी आलिम की मौत होती है तो इस्लाम में एक ख़ला पैदा हो जाता है ऐसा ख़ला कि रोज़े क़यामत तक कोई शै उसे पुर नहीं कर सकती।

आपके जिस्मे मुक़द्दस को आपके दोस्तों और शागिर्दों ने मौलाए मुत्तक़ियान हज़रत अमीरुल मोमिनीन अलैहिस्सलाम के सह्ने मुक़द्दस में सेपुर्दे ख़ाक किया।

शैख़ अन्सारी (र.अ.) की वफ़ात पर आपके बरादर शैख़ मन्सूर ने आपकी विलादत व वफ़ात की तारीख़ पर येह शेर पढ़ा:

ज़े ग़ैब आमदा तारीख़े हयात व ममात
'ग़दीर' आमे तवल्लुद 'फ़राग़' आमे वफ़ात

आख़िर में हम परवरदिगारे आलम की बारगाह में दस्त बदुआ हैं कि हमें सीरते अह्ले बैत अलैहिमुस्सलाम पर अमल पैरा होने की तौफ़ीक़ इनायत फ़र्माए। इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के ज़ुहूर में तअजील (ताजील) फ़र्माए और हमें उनके अअवान (आवान) व अन्सार में शुमार फ़र्माए।

✦ ☆ ☆ ☆ ✦

फ़ज़ाएल-ओ-औसाफ़े असहाबे इमाम महदी (अलैहिस्सलाम)

येह हक़ीक़त है कि ख़ुदा की ज़मीन उसके मुख़लिस बन्दों से कभी खाली नहीं रही। तारीख़े इंसानियत इस बात की शाहिद है कि अल्लाह के नेकूकार बन्दों ने सिर्फ़ उसकी इबादत की और किसी की परवाह न की। उन लोगों का समाज के ताक़तवर और सरमाया दार तबक़े ने मज़ाक़ उड़ाया, उनकी एहानत की, उनसे तर्के तअल्लुक़ कर डाला मगर येह अपनी नेकी और इबादत से कभी भी मुनहरिफ़ न हुए। तारीख़ येह भी बताती है कि कई क़ौमों ने अपने अपने अम्बिया को क़त्ल कर डाला। वही अम्बिया जो इन्हें दाएमी परेशानियों और मुसीबतों से बचाने आए थे अपनी अपनी क़ौम के ज़ुल्मो सितम का शिकार हुए। मुख़्तसर येह कि इस रूए ज़मीन पर हमेशा शर पसन्द अनासिर की हुकूमत रही और नेकूकार अफ़राद उनके ज़ुल्म का शिकार बनते रहे और मसाएल बर्दाश्त करते रहे। कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने उन बातिल हुकूमतों के ख़ेलाफ़ आवाज़ उठाई मगर आख़िर कार उनकी आवाज़ों को भी दबा दिया गया और उनके वजूद को दुनिया से ख़त्म कर दिया गया। क़ुरआन ऐसे लोगों के बारे में एलान कर रहा है।

इन्नल्लज़ीना यकफ़ोरूना बे आयातिल्लाहे व यक़्तोलूनन्नबीयीना बेग़ैरे हक़्क़िवँ व यक़्तोलूनल्लज़ीना यामोरूना बिलक़िस्ते मिनन्नासे फ़ बश्शिर हुम बेअ़ज़ाबिन अलीम।

(सूरए आले इमरान: २१)

''जो लोग आयाते इलाहिया का इंकार करते हैं और नाहक़ अम्बिया का क़त्ल करते हैं और उन लोगों को क़त्ल करते हैं जो अद्लो इंसाफ़ का हुक्म देने वाले हैं। उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दीजिए।''

येह मज़लूम क़ौमें जब मज़ालिम का बोझ उठाते उठाते थक जाती थीं और अपने वक़्त के नबी से फ़रियाद करती थीं तो उनके नबी उन्हें सब्र की तलक़ीन करते और ख़ुशख़बरी देते कि एक रोज़ इस ज़मीन की हुकूमत नेक लोगों के हाथों में होगी।

जैसा कि सूरए आराफ़ की आयत १२८ में हज़रत मूसा (अ.स.) की दास्तान में मिलता है।

क़ाला मूसा ले क़ौमेही इस्तईनू बिल्लाहे वसबेरू इन्नल अर्ज़ा लिल्लाहे, यूरिसोहा मय्यशाओ मिन एबादेही, वल आक़ेबतो लिल मुत्तक़ीन।

''मूसा (अ.स.) ने अपनी क़ौम से कहा: अल्लाह से मदद चाहो और सब्र करो यक़ीनन येह ज़मीन अल्लाह की है वोह अपने बन्दों में जिसको चाहता है वारिस बनाता है और आक़ेबत सिर्फ़ मुत्तक़ीन के लिए है।''

येह कौन लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने ज़मीन का वारिस व मालिक बनाया है? क़ुरआन ने उन लोगों की मद्ह सराई मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर की है। तफ़ासीर का जाएज़ा लेने से येह बात वाज़ेह हो जाती है कि येह लोग असहाबे इमामे महदी अलैहिस्सालाम हैं जिनके बारे में हज़रत अमीरुल मोमनीन (अ.स.) फ़र्माते हैं।

रेजालुन अरफ़ुल्लाहा हक़्क़ा मअ़रेफ़तेही व हुम अंसारुल महदीये आख़ेरुज़्ज़मान।

(कन्ज़ुल उम्माल, सफ़हा ३४, हदीस ४)

इमाम महदी अलैहिस्सलाम आख़ेरुज़्ज़मान के अंसार वोह मर्द होंगे जो अल्लाह की मारेफ़त इस तरह रखते होंगे जैसे मारेफ़त रखने का हक़ है।

इन्हीं असहाब के बारे मे क़ुरआन बता रहा है।

क़ाला लौ अन्न ली बेकुम क़ूवतन औ ऑवी एला रुकनिन शदीद

(सूरए हूदः ८०)

इस आयत की तफ़सीर में इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) फ़र्माते हैं कि

क़ूवत से मुराद इमाम क़ाएम (अ.स.) हैं। और रुक्ने शदीद से असहाबे क़ाएम (अ.स.) की क़ूवत मुराद है।

अर्रजुलो मिनहुम लेयूता क़ूवता अरबईन रजुलन व अन्न क़लबहू लअशद्दो मिन ज़ोबोरिल हदीदे व लौ मरू बेजेबालिलहदीदे लक़ऊहा वला यकुफ़्फ़ून सोयूफ़हुम हत्ता यर्ज़ल्लाहो अ़ज़्ज व जल्ल

इनमें हर एक मर्द के पास चालीस लोगों की ताक़त दी गई है और उनके दिल लोहे से ज़्यादा सख़्त हैं। और अपनी तलवारें उस वक़्त तक नेयाम में नहीं रखेंगे जब तक कि ख़ुदा उनसे राज़ी न हो जाए।

(कमालुद्दीन, जिल्द २, सफ़हा ६७३, हदीस २६, बाब ५८)

येह वोह मुन्तख़ब अफ़राद होंगे जिन्हें रसूले ख़ुदा सल्लअम ने अपना भाई क़रार दिया है। और अपने असहाबे बावफ़ा से अफ़ज़ल क़रार दिया है। चुनान्चे आप दुआगो हैं।

अल्लाहुम्मा लक़्क़ेनी इख़वानी

या अल्लाह मुझे मेरे भाइयों से मिलादे।

आप (स.अ.) के असहाब ने दरियाफ़्त किया या रसूलल्लाह क्या हम आप के भाई नहीं हैं? आप ने जवाब दिया

नहीं तुम मेरे असहाब हो मेरे भाई एक क़ौम है जो आख़िरुज़्ज़मान मे मुझ पर ईमान रखती होगी हालाँकि उन्होंने मुझे न देखा होगा... फिर आपने उनकी फ़ज़ीलत बयान फ़र्माई।

(बेहारुल अनवार, जिल्द ५२, सफ़हा १२५)

रावी कहता है कि हम इमाम सादिक़ (अ.स.) के हमराह थे कि असहाबे इमाम महदी (अ.स.) का ज़िक्र हुआ आपने फ़र्माया:

सलासो मेअतुन व सलासतो अ़शरो व कुल्लो वाहेदिन युरा नफ़्सोहू फ़ी सलास मेआ

(मुन्तख़बुल असर, सफ़हा, ४८५)

तीन सौ तेरह अफ़राद हैं और हर एक अपने अन्दर तीन सौ अफ़राद की क़ूवत पाएगा।

मज़ीद तफ़सीर में मिलता हैं अल्लज़ीना यूमेनूना बिलग़ैब... से राबेता देते हुए एक हदीस जो तवील है रसूले ख़ुदा सल्लअम ने इरशाद फ़र्माई है, आख़िर में एक यहूदी बनाम जुन्दब के सवाल पर जवाब देते हुए फ़र्माया:

तूबा लिस्साबेरीना फ़ी ग़ैबतेही, तूबा लिलमुत्तक़ीन अ़ला महब्बतेहिम, ऊलॉएका वसफ़हुमुल्लाहो फ़ी किताबेही व क़ाला वल्लज़ीना यूमेनून बिलग़ैबे, व क़ाला ऊलाए का हिज़बुल्लाहे अ ला इन्न हिज़बल्लाहे हुमुल मुफ़लेहून

(अलग़ैबा, किफ़ायतुल असर, सफ़हा ५६, अलबुरहान, जिल्द ३, सफ़हा १४६, यनाबीउ़लमोवद्दा, सफ़हा ४४२)

कामियाब हैं उनकी ग़ैबत में सब्र करनेवाले, कामियाब हैं उनके हमराह मुत्तक़ी अफ़राद। यही वोह हैं जिनकी तौसीफ़ अल्लाह ने अपनी किताब में इस तरह फ़र्माई है, 'जो लोग ग़ैब पर ईमान रखते हैं, और येह कि यही लोग अल्लाह का गिरोह हैं, जान लो अल्लाह का गिरोह ही कामियाब है।

(२) औलिया अल्लाहः दोस्ताने ख़ुदा

सूरए यूनुस की आयत ४२ की तफ़सीर में इमाम सादिक़ (अ.स.) अपने एक सहाबी से फ़र्माते हैं।

या अबा बसीर तूबा लेशी़अते क़ाएमेनल-मुनतज़ेरीना ले ज़ुहूरेही फ़ी ग़ैबतेही वलमुतीईना लहू फ़ी ज़ुहूरेही ऊलॉएका औलियाउल्लाहिल्लज़ीना ला ख़ौफ़ुन अ़लैहिम व ला हुम यहज़नून।

(नूरुस्सक़लैन, जिल्द १, सफ़हा ७८१, यनाबीउ़लमोवद्दा, सफ़हा ४४२, इस्बातुल हुदा, जिल्द ३, सफ़हा ४७५, अलबुरहान, जिल्द १, सफ़हा ५६४, अस्साफ़ी, जिल्द २, सफ़हा १७३)

ऐ अबू बसीर! ख़ुश ख़बरी है हमारे क़ाएम के

शीओं के लिए जो उनकी ग़ैबत में उनके ज़ुहूर के मुनतज़िर हों और उनके ज़ुहूर के बाद उनके एताअत गुज़ार होंगे। यही वो लोग हैं जो अल्लाह के दोस्त हैं जिन्हें कोई ख़ौफ़ या हुज़्न नहीं होगा।

असहाबे इमामे महदी अज्जलल्लाहो तआला फ़रजहुश्शरीफ़ के बारे में इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) फ़र्माते हैं।

युसलेहो अहदोकुम व तहत रासेही सहीफ़तुन अलीमन मकतूबुन ताअतुन मारूफा

(इस्बातुल हुदा, जिल्द ३, सफ़हा ५८२, नूरुस्सक़लैन, जिल्द ३, सफ़हा ६१६, मुंतख़बुल असर, सफ़हा ४४०, कमालुद्दीन, जिल्द २, सफ़हा ६५४)

जब तुममें से कोई सुब्ह उठेगा तो उसके सर के नीचे एक सहीफ़ा होगा जिस पर लिखा होगा ताअतुन मारूफ़ा (मशहूर एताअत वाला) यानी उनकी एताअत गुज़ारी एक मशहूर बात होगी। इसका ज़िक्र कुरआन में सूरए नूर आयत ५३ में इस तरह आया है।

व अक़समू बिल्लाहे जहदा ऐमानेहिम लइन अमरतहुम लयख़रोजुन्ना क़ुल ला तुक़्सेमू, ताअतुम्मारूफ़ा, इन्नल्लाहा ख़बीरुम बेमा तअमलून

इसके अलावा उनकी एताअत का ज़िक्र सूरए मरयम की आयत ७५, ७६ में और सूरए जिन की आयत २४ में भी मिलता है। इन आयतों के ज़ैल में इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से येह हदीस नक़्ल हुई है:

व अम्मा क़ौलोहू: हत्ता एज़ा रऔ मा यूअदूना फ़होवा ख़ुरूजुल क़ाएम (अ.स.) ... क़ुलतो: क़ौलोहू: व यज़ीदुल्लाहुल्लज़ीनहतदौ होदन क़ाल: यज़ीदोहुम, ज़ालेकलयौमा होदन अला होदन बेइस्बातेहेमुल क़ाएमा हैसो ला यजहदूनहू वला युनकेरूनहू

(अलकाफ़ी, जिल्द १, सफ़हा ४३, अस्साफ़ी, जिल्द ३, सफ़हा २९१, अलबुरहान, जिल्द ३, सफ़हा २०, नूरुस्सक़लैन, जिल्द ३, सफ़हा ३५५, इस्बातुल हुदा, जिल्द ३, सफ़हा ४४७)

और जहाँ तक अल्लाह के इस क़ौल की बात है कि यहाँ तक कि वोह देखेंगे उस चीज़ को जिसका उनसे वादा किया गया था वोह चीज़ क़ाएम (अ.स.) का ज़हूर होगा ... फिर रावी ने सवाल किया: और इस क़ौले ख़ुदा से क्या मुराद है कि अल्लाह उन हिदायत याफ़्ता लोगों की हिदायत में इज़ाफ़ा फ़र्माएगा।' आप ने फ़र्माया उस दिन अल्लाह उनकी हेदायत को बढ़ा देगा इसलिए कि वोह क़ाएम (अ.स.) की इत्तेबाअ करेंगे। न उसका इन्कार करेंगे न उन से किसी बात पर बह्स करेंगे।

(३) महबूबे ख़ुदा

कुरआने करीम में उन असहाब की तारीफ़ में येह जुम्ले भी मिलते हैं:

फ़सौफ़ा यातिल्लाहो बेक़ौमिँय युहिब्बोहुम व योहिब्बूनहू अज़िल्लतिन अलल मोमेनीन अइज़्ज़तिन अलल काफ़ेरीन

(सूरए मायदा: ५४)

पस बहुत जल्द अल्लाह एक क़ौम को ज़ाहिर करेगा जो उसे महबूब होगी और वोह अल्लाह को महबूब रखते होंगे, मोमनीन के सामने ख़ाकसार होंगे और काफ़िरों पर सख़्त होंगे।

इस आयत की तफ़सीर मे इमाम सादिक़ (अ.स.) से रवायत है कि:

इन्न साहेबा हाज़ल अम्रे महफ़ूज़ुन लहू असहाबोहू, लौ ज़हबन्नासो जमीअन आतल्लाहा लहू बे असहाबेही व हुमुल्लज़ीना क़ालल्लाहो अज़्ज व जल्ल फ इँयकफुरु बेहा हॉऊलॉए फ़क़द वक्कलना बेहा क़ौमल्लैसू बेहा बेकाफ़ेरीन व हुमुल्लज़ीना क़ालल्लाहो फ़ीहिम: फ़सौफ़ा यातिल्लाहो ले क़ौमिँ योहिब्बोहुम व योहिब्बूनहू, अज़िल्लतिन अलल मोमेनीन अइज़्ज़तिन अलल काफ़ेरीन

यक़ीनन अल्लाह ने साहेबे अम्र (इमाम महदी (अ.स.)) के लिए उनके असहाब चुन लिए हैं। अगर सारे इंसान उनका साथ छोड़ दें तब भी

अल्लाह उनके लिए असहाब को जमा करेगा जिनके बारे में उसने कह दिया है: पस अगर वोह उसका इन्कार करदें तो हम एक क़ौम को चुन लेंगे जो कुफ़्र नहीं करेगी और यही वोह हैं जिनके बारे मे इरशाद है: पस बहुत जल्द अल्लाह एक क़ौम को ज़ाहिर करेगा जो उसे महबूब होगी और वोह अल्लाह को महबूब रखते होंगे, मोमेनीन पर मेह्रबान होंगे और काफ़िरों पर स. ख्त होंगे।

(अलबुरहान, जिल्द १, सफ़हा ४७८, बेहारुल अनवार, जिल्द ५२, सफहा ३८०, यनाबीउ़ल मोवद्दा, सफ़हा ४२२, ग़ैबते नोमानी, सफ़हा ३१६)

इसी तरह तफ़सीर क़ुम्मी में येह जुम्ले मिलते हैं कि येह वोह लोग थे जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही के असहाब थे और उन लोगों ने आले मुहम्मद अ़लैहिमुस्सलाम का हक़ ग़स्ब किया और दीन से मुरतद हो गए और इस तरह अपने आप को दाएमी अ़ज़ाब में मुबतेला कर लिया। रेहलते रसूल (स.अ.) के दिन से लेकर आज तक अह्लेबैते अतहार अ़लैहिमुस्सलाम को उनके हक़ से महरूम रखा गया। उनके घर वालों को और चाहने वालों को सताया गया और सिर्फ़ उनकी मुहब्बत के जुर्म में क़त्ल किया गया। इस तरह आले मुहम्मद अ़लैहिमुस्सलाम पर हर ज़माने मे ज़ुल्म ढाए गए और इन मज़ालिम का इन्तेक़ाम और क़ेसास आख़ेरी ज़माने में इमाम महदी (अ.स.) और उनके असहाब लेंगे। येह दूसरा गिरोह है जिसका ज़िक्र इन अहादीस मे हुआ है।

अल्लाह ने इस दूसरे गिरोह की पाँच सिफ़ात बताई हैं अव्वलन वोह आले मुहम्मद अलैहिमुस्सलाम के हक़ का इंकार नहीं करेंगे। उनके मरतबे और अहकाम के सामने सरे तसलीम ख़म करेंगे। दूसरे येह कि अल्लाह उनसे मुहब्बत रखता है और येह लोग अल्लाह से मुहब्बत रखते हैं। और यही ईमान की अ़लामत है। तीसरे मोमेनीन पर मेह्रबान होंगे और काफ़िरों पर सख़्त होंगे। यानी जब मोमिन से मिलेंगे तो नरमी और इनकेसारी से और काफ़िर (आले मुहम्मद अ़लैहिमुस्सलाम के दुश्मन) से कोई मुरव्वत नहीं करेंगे और चौथी सिफ़त येह कि ख़ुदा की राह में जेहाद करेंगे, जेहाद से मुराद सिर्फ़ जंग नहीं बाल्कि जद्दोजेहद करेंगे, मुश्किलात का सामना करेंगे। और आख़िरी येह कि किसी मलामत करने वाले की मलामत इन्हें डराएगी नहीं येह अपने ईमानो अ़मल में मुस्तहकम होंगे किसी को चाहे कितना ही बुरा क्यों न लगे।

(४) मज़लूम

असहाबे इमाम महदी (अ.स.) को क़ुरआन में लफ़्ज़े मज़लूम से भी याद किया गया है:

ओज़ेना लिल्लज़ीना युक़तलून बे अन्नहुम ज़ोलेमू, व इन्नल्लाहा अ़ला नसेहिम लक़दीर।

(सूरए हज: ३९)

जिन लोगों से मुसलसल जंग जारी है उन्हें उनकी मज़लूमियत की बेना पर इजाज़त है कि वोह जंग करें और यक़ीनन अल्लाह उनकी मदद करने पर क़ुदरत रखता है।

इस आयत के बारे मे इमाम बाक़िर (अ.स.) फ़र्माते हैं

हैया फ़िलक़ाएमे व असहाबेही।

येह आयत क़ाएम (अ.स.) और उनके असहाब के बारे में हैं।

(तावीलुल आयात, जिल्द १, सफ़हा ३३८, बुरहान, जिल्द १, सफ़हा ९३, बेहार, जिल्द २४, सफ़हा २२५, इस्बातुल हुदा, जिल्द ३, सफ़हा ५६३)

(५) अमान देने वाला हरम

लफ़्ज़े हरम यूँ तो मस्जिदुन्नबी और ख़ानए काबा के लिए इस्तेमाल होता है। इसी तरह शह्रे मक्का को भी क़ुरआन ने बलदुल अमीन के नाम से याद किया है। येह वोह मक़ामात हैं जहाँ एक मक्खी और मच्छर तक को मारना हराम है और येह तमाम मख़लूकात के लिए जाए अमान है। जब रसूल्लुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने मक्का फ़त्ह किया तो आप ने येह एलान करवाया कि जो भी ख़ानए ख़ुदा में या मेरे रिश्तेदारों या मुसलमानों के घर में अमान लेगा उसे अमान मिलेगी। इस तरह मक्का ज़र्रा बराबर ख़ून बहाए बग़ैर फ़त्ह हुआ। अगर हम क़ुरआन की आयतों का जाएज़ा लें तो पता

चलता है कि हज़रत इमाम महदी (अ.स.) के ज़हूर का वक़्त जब क़रीब आएगा तो ज़मीन ज़ुल्मो जौर से भरी होगी गुनाहों पर न सिर्फ़ येह कि इसरार होगा बल्कि गुनाह को गुनाह न समझा जाएगा। मोमेनीन और मुख़लिस अफ़राद का मज़ाक़ उड़ाया जाएगा। फ़ासिक़ों और बेवक़ूफों के हाथ में हुकूमत होगी। बदकारी आम बात होगी। इसके अलावा बीमारियाँ, हादेसात, रोज़मर्रा की बात होगी। क़त्लो ग़ारतगरी हर तरफ़ दिखाई देगी। कोई शहर, कोई जगह आफ़ाक़ी या इंसानी बलाओं से महफ़ूज़ न होगी। जब हज़रत का ज़हूर होगा तो आप अपने असहाब के साथ ज़मीन को ज़ुल्मो कुफ़्र की आलूदगी से पाक करेंगे।

इमाम सादिक़ (अ.स.) फ़र्माते हैं कि येह आयत

फ़मन दख़लहू काना आमेनन

हमारे क़ाएम (अ.स.) और उनके असहाब के बारे में है। जो भी उनकी बैअत करेगा और उनके गिरोह में शामिल हो जाएगा वह अमान पाएगा।

(एललुश्शराए, सफ़हा ८९, अस्साफ़ी, जिल्द १, ३५१, हिलयतुल अबरार, जिल्द २, सफ़हा १४८, अलबुरहान, जिल्द १, सफ़हा २९९, बेहारुल अनवार, जिल्द २, सफ़हा २९१, नूरुस्सक़लैन, जिल्द १, सफ़हा ३६९, अलअवालिम, जिल्द ३, सफ़हा ६१३)

(६) उम्मतुन मअ़दूदतुन (मादूदतुन) एक मुख़्तसर उम्मत

इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ.स.) से मन्क़ूल हदीस में असहाबे इमाम महदी (अ.स.) के लिए लफ़्ज़े उम्मतुन मादूदा इस्तेमाल हुआ है।

असहाबुलक़ाएमे अलैहिस्सलाम अस्सलासो मेअतिन वलबज़अतो अशरिन रजोलन हुम वल्लाहिलउम्मतुलमादूदतुल्लती क़ालल्लाहो फ़ी किताबेही: व लइन अख़्ख़रना अनहुमुल अ़ज़ाब एला उम्मतिन मादूदतिन क़ाला: यजमऊन लहू फ़ी साअ़तिन वाहेदतिन फ़ज़इल ख़रीफ़

असहाबे क़ाएम (अ.स.) येह तीन सौ दस से कुछ ज़्यादा मर्द हैं जिनके बारे मे अल्लाह ने उम्मतुन मादूदतुन का लफ़्ज़ अपनी किताब में इस्तेमाल किया है।

(सूरए हूद: ८)

फिर आपने फ़र्माया: इन्हें एक ही साअ़त में जमा किया जाएगा जिस तरह बारिश के बादल जमा होते हैं।

(अल अ़याशी, जिल्द ३, सफ़हा ५७)

किताब तावीलुल आयात में इस आयत के ज़ैल में इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रवायत मिलती है कि:

क़ाला: अलअ़ज़ाबो होवलक़ाएमो (अ.स.) व होवा अ़ज़ाबुन अला अ़दाएही वल उम्मतुलमादूदतो हुमुल्लज़ीना यक़ूमून मअ़हू बेअ़ददे अहलेबद्रिन।

आप ने बताया अ़ज़ाबुन से मुराद क़ाएम (अ.स.) हैं जो उनके दुश्मनों के लिए अ़ज़ाब के मानिन्द हैं और उम्मतुन मादूदतुन येह वोह लोग हैं जो उनके साथ जेहाद करेंगे और उनकी तादाद जंगे बद्र में शरीक अफ़राद की होगी।

(तावीलुल आयात, जिल्द १, सफ़हा २२३, हदीस ३, अल बुरहान, जिल्द २, सफ़हा २०२, हदीस ८)

इन अहादीस से मुन्दर्जा ज़ैल नुकात सामने आते हैं।

(१) इमाम महदी (अ.स.) और उनके असहाब का दुनिया में अद्ल व इंसाफ़ राएज करना उस वक़्त जब कि दुनिया ज़ुल्म से भरी होगी। मगर उनकी तादाद सिर्फ़ तीन सौ से कुछ ज़्यादा होगी। ये तादाद बता रही है कि उस ज़माने में मोमेनीन की क़िल्लत होगी।

(२) सारी दुनिया मे फैले होने के बावजूद येह तीन सौ तेरह अफ़राद ब एअ़जाज़ रातों रात या कुछ लम्हों मे लशकर की शक्ल मे हज़रत इमाम महदी (अ.स.) के लिए तैयार हो जाएँगे।

(३) उस लशकर की मिसाल बारिश बरसाने वाले बादल की दी है। जो बरसते हैं तो सूखी और बेजान ज़मीन को दोबारा ज़िन्दा कर देते हैं। और दूसरी तरफ़ इतना क़ह्त भी बरसाते हैं कि पस्त लोग उसके

पानी में ग़र्क़ हो जाते हैं।

(४) इमाम क़ाएम (अ.स.) के लिए क़ुरआन ने लफ़्ज़े अ़ज़ाब इस्तेमाल किया है कि वोह अपने दुश्मनों के लिए अ़ज़ाब होंगे। येह शायद इसलिए है कि मुनाफ़िक़ और मुशरिक के लिए मोहलत ख़त्म हो चुकी होगी।

क़ुरआन और अहादीस में इन मोहतरम अफ़राद की सिफ़ात और करामतें तफ़सीलन बयान की गई हैं। और उन तमाम बातों का ज़िक्र यहाँ करना नामुम्किन है। आख़िर मे सिर्फ़ येह दुआ है कि अल्लाह हमें भी येह सआ़दत अता करे कि हम इन असहाब के ग़ुलामों में शामिल हों और इस तरह अल्लाह की आख़िरी हुज्जत की नुसरत कर सकें।

अल्लाहुम्मा अ़ज्जिल लेवलीयेकल फ़रज वजअ़ल्ना मिन अंसारेही व अअ़वानेही व ख़ुद्दामेही।

सफ़हा न. ३३ का बाक़ी

हाथों हो रहा हैं जो शराफ़त और इंसानियत के नक़ीब हैं? और जो अम्न की बात करके दुनिया में हलचल मचाए हुए हैं?

क़सम है उस ख़ूनी सुब्ह की जो इ़राक़ में नमूदार होती है और उस कराहती हुई शाम की जो शीओं की बस्तियों में अपने वक़्त पर आती है और चली जाती है। वोह महदिए दौराँ ज़ालिमों से मज़लूमों की एक एक कराह का बदला लेकर उन्हें अपनी तलवार का पानी पिलाएगा। ऐ मेरे इमाम 'मीम हे मीम दाल' महदिए दौराँ, एक नज़र अपने जद की आरामगाह की तरफ़! आप को वास्ता है आप के जद के ज़िक्र के अरफ़अ व अअ़ला शानो शौकत का जिसकी वरासत ख़ुदा वन्द मुतआ़ल ने आप को अ़ता फ़र्माई है और जिस चादर के तह्त आप का ज़िक्र सुब्ह-ओ-शाम नूर बन कर उभर रहा है। अपने जद के हरम के पास बसने वाले मज़लूम मज़दूरों, जफ़ाकशों, मेहनत करने वालों और नादारों की मदद फ़र्माइए। हम सब की हर आन यही दुआ है 'अलअ़जल अलअ़जल या अबा सालेहल महदी अदरिकना।'

सफ़हा न. ३५ का बाक़ी

ऐ हबीबे ख़ुदा ख़त्मे अंबिया-ओ-मुरसलीन आप हम पर येह भी रौशन कर दें इस ज़िक्र के दामन में उसकी चादर के तहत कौन से नूर ज़ौ फ़ेगन हैं?

तारीख़ के दरीचे खुले! रवायात के ज़ख़ाएर से आप के लबहाए मुबारक से निकले हुए जुम्लों से इल्म की शमा फ़रोज़ाँ हुई और मैंने सुना आपने फ़र्माया:

ऐ अ़ली तुम्हारा ज़िक्र मेरा ज़िक्र है और मेरा ज़िक्र खुदा का ज़िक्र है और ख़ुदा का ज़िक्र इ़बादत है। मुझे मेरे ख़ुदा ने ख़बर दी है:

(१) ***व रफ़अना लका ज़िकरक बेअ़लीयिन सेहरक***

मैंने आप के ज़िक्र को आप के लिए रफ़अ़त बख़्शी आप के दामाद अ़ली (अ.स.) के ज़रीए।

(बेहारुल अनवार, जिल्द ३६, सफ़हा ११६)

(२) मैं और अ़ली एक ही नूर से हैं।

(३) ऐ अ़ली मेरा गोश्त व पोस्त तुम्हारा गोश्त व पोस्त है।

(४) ऐ अ़ली मेरे ख़ून में ईमान जिस तरह घुला मिला है उसी तरह तुम्हारे ख़ून में।

(५) ऐ अ़ली तुम न होते तो मेरे बाद मोमिनो की पहचान नहीं होती।

(६) अ़ली हक़ के साथ हैं और हक़ अ़ली के साथ है।

(दुआए नुदबा)

और ग़दीरे ख़ुम मे इरशाद फ़र्माया:

(७) *मेरे बाद मेरे बारह जानशीन होंगे जिसमें अव्वल अ़ली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) हैं और आख़िर 'मीम हे मीम दाल' महदी होगा।*

फिर अपनी पेशीन गोई में फ़र्माया:

(८) *हमारे आख़िरी जानशीन की एक तूलानी ग़ैबत होगी उसका नाम मेरा नाम होगा उसकी कुन्नियत मेरी कुन्नियत होगी। वोह जब ज़हूर करेगा तो दुनिया को अ़द्लो इंसाफ़ से भर देगा जिस तरह यह दुनिया ज़ुल्मो जौर से भरी होगी।*

(दुवाए नुदबा)

और ख़ुदा वन्द करीम ने इरशाद फ़र्माया:

जब ये ज़मीन मुर्दा हो जाएगी (वह अपनी कुदरते कामेला से) उस ज़मीन को हयात बख़्शेगा।

और फिर ख़ुदा वन्द करीम ने अपने बन्दगाने ख़ास को ख़बर दे दी कि अगर तुम मोमेनीन में से हो तो बक़ीयतुल्लाह तुम्हारे लिए ख़ैर है।

ख़ुदा वन्द मुतआ़ल ने ज़िक्रे रसूले अकरम (सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम) को बलन्दियों की तमाम मंज़िलों पर फ़ाएज़ कर दिया है और इन्हीं अरफ़अ़ व अअ़ला मंज़िलों की तरफ़ ख़ुदा वन्द मुतआ़ल ने इमाम हुसैन (अ.स.) के लिए इरशाद फ़र्माया:

ऐ नफ़्से मुतमइन पलट आ अपने रब की तरफ़ यानी उन मंज़िलों की तरफ़ जिसको ख़ुदा वन्द मुतआ़ल ने रफ़अ़त मआब क़रार दिया है।

और रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने आगे चल कर इरशाद फ़र्माया:

इंतेज़ार करो

यानी वोह दिन क़रीब है जब महदी आख़िरुज़्ज़मान (अ.स.) का ज़हूर होगा। ख़ुद साख़्ता फ़क़ीहों, ख़ाएन मोवर्रिख़ों, ज़र ख़रीद मुहद्दिसों और फ़ज़ाएले आले मुहम्मद के मुकस्सिरों की फ़ित्ना कारियों से जो इस्लाम की सूरत को मस्ख़ करने की सइ़ये लाहासिल कर रहे हैं, दहशत गर्दी को सद्रे इस्लाम की पाकीज़ा शरीअ़त का मुहाफ़िज़ समझ रहे हैं, अपने अपने कैफ़रे किरदार को पहुँच जाएँगे। येह दहशतगर्द कैसे लोग हैं? येह कौन लोग हैं? उनका मज़हब क्या है? कहीं जान पर खेलने वाले, बिकाऊ माल की तरह होते हैं!!

क्या वोह फ़र्ज़न्दे रसूल जो हमारी उम्मीदों का मरकज़ और इमामे ज़माना है, जिसके ज़िक्र को ख़ुदा वन्द मुतआ़ल ने रफ़अ़त बख़्शी है वोह इराक़ की बरबादी और ख़ूँ रेज़ी नहीं देख रहा है? वोह जो आसमानों की ख़बर रखता है मुस्तक़बिल के आने वाले अ़हद से ख़ूब वाक़िफ़ नहीं है? वोह उन मज़ालिम से बेख़र है जो इन ज़ालिमों के

बाक़ी सफ़हा न. ३२ पर

अलमुन्तज़र

सिलसिलए दुरूस

अजीज़ गेरामी! सलाम-ओ-रहमत

ख़ुदावन्द करीम की एनायतों और हज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम की नवाज़िशों के ज़ेरे साया आप बख़ैर होंगे। ख़ुदावन्द आ़लम हज़रत हुज्जत के ज़हूर में तअ़जील फ़र्माए और हम सबको हज़रत के ख़ादिमों में शुमार फ़र्माए। आमीन.

हज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम की बाबरकत ज़ात से मन्सूब रेसाला ''अलमुन्तज़र'' सबक़ नं. १ तक़रीबन सभी अहमुन्तज़र मेम्बरान को इरसाल किया था और किया जा रहा है जिसमें एक सवालनामा होता है जिसके जवाब भी उसी सबक़ में मौजूद होते हैं।

जिन हज़रात का पुर करदा सवालनामा हम तक पहुँचा हमने दूसरा सबक़ इरसाल कर दिया। लेकिन जिन हज़रात के जवाब मौसूल नहीं हुए (और अक्सरीयत ऐसे अफ़राद की है) उनकी ख़िदमत में दूसरा सबक़ इरसाल नहीं कर सके। अगर आप इस सिलसिलए दुरूस में वाक़ेअ़न दिलचस्पी रखते हैं तो हमें बस एक पोस्ट कार्ड से इत्तेला करें हम दूसरा सबक़ इरसाल करने की सआ़दत हासिल करेंगे। जवाब न मिलने पर येह माना जाएगा कि आप सिलसिलए दुरूस में दिलचस्पी नहीं रखते। अगर एक सबक़ मिलने के बाद आपको दूसरा सबक़ दो महीने के अन्दर मौसूल नहीं हुआ हो तब भी एक ख़त को ज़रीए हमें ज़रूर इत्तेला करें ताकि सिलसिले को जारी रखा जा सके।

येह सिलसिला १८ असबाक़ पर मुश्तमिल है और येह फ़िलहाल उर्दू, हिन्दी और अँग्रेज़ी में मौजूद है। इसके अलावा ख़ुसूसी शुमारे मुहर्रम और शअ़बान (शाबान) में इरसाल किए जाते हैं। ख़ुसूसी शुमारा न मिलने पर एक ख़त के ज़रीए हमें मुत्तला करें या इस नम्बर (**९९८७७७७७५७**) पर **एस एम एस** करें।

अक्सर हमें ना मुकम्मल पते मौसूल होते हैं जिस पर हम रेसाला इरसाल नहीं करते। हर एक ख़त-ओ-किताबत में अपना रुक्नियत नम्बर (रिफ़रेन्स नम्बर) ज़रूर लिखें। बेहतर है कि अपना पता अँग्रेजी में लिखें। सिलसिलए दुरूस का कोई ख़ास और मोअ़य्यन ज़रे इश्तेराक या हदिया नहीं है। आप इस कारे ख़ैर में हस्बे तौफ़ीक़ जो भी रक़म इरसाल फ़र्माएँगे क़ुबूल करली जाएगी। अलबत्ता सिर्फ़ ड्राफ़्ट या मनी आर्डर ही की शक्ल में रवाना फ़र्माएँ। बिलख़ुसूस मनी आर्डर की स्लिप पर अपना नाम, पता और रुक्नियत नम्बर ज़रूर लिखें। आप इस सिलसिले में शरई रुक़ूम भी इरसाल कर सकते हैं।

आइए हम सब मिलकर हज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के लिए ज़मीन हमवार करें और उनकी ख़ुशनूदी के असबाब फ़राहम करें ताकि ख़ुदावन्द आलम हम सबको हज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम के ख़ादिमों में शुमार करे। आमीन.

वस्सलामो अ़लैकुम व रहमतुल्लाहे वबरकातुहू

सफ़हा न. ३५ का बाक़ी

येह हैरत अंगेज़ इरतेक़ाए बशरीयत की नज़र बलन्दियों की तरफ़ वहाँ तक पहुँची है कि इंसान फ़ज़ा से आगे सैटेलाइट को नस्ब करके दुनिया के चप्पे चप्पे की तसवीर अपने कम्प्यूटर पर बैठ कर देख रहा है। ज़मीन का गोशा गोशा उनकी निगाहों से पोशीदा नहीं है। सैयारों पर उतरने की जद्दो जेहद में इतनी ऊँचाई तक जा चुका है कि उसे मिर्रीख़ की अर्ज़ियाई कैफ़ियत की मालूमात मे रोज़ बरोज़ अ़क़्ल को चौंका देने वाला एज़ाफ़ा होता जा रहा है। सारी तगो दौ, सारी तवज्जोहात का मरकज़ औज व बलन्दी पर अपना अपना परचम लहराने का है। किसी मरकज़ी क़यामगाह जो फ़ज़ाई और ख़लाई हदों में हो इस अर्ज़े ख़ाकी पर तसल्लुत की बुनियाद बन सकता है और येह नज़रिया रोज़ बरोज़ मज़बूत होता जा रहा है। लेकिन वोह शायद येह भूल गए कि इस मुक़ाबले की दौड़ में वोह ज़मीन जहाँ से बलन्दियों के सफ़र का आग़ाज़ होता है उसका क्या हश्र होगा। कहीं वही असास न डगमगाने लगे। चुनान्चे आज रोज़ अख़बार मे आ रहा है कि मौसम का मिज़ाज बिगड़ रहा है, निज़ामे शम्सी में तग़य्युरात के निशान पाए जा रहे हैं, कुर-ए-अर्ज़ में तब्दीयाती बदलाव के असरात नुमायाँ हो रहे हैं। ग़रज़ बक़ौल अ़ल्लामा इक़बाल 'उ़रूजे आदमे ख़ाकी से अंजुम सहमे जाते हैं'। येह एक शेअ़री तख़य्युल सही लेकिन इसके रंग व आहंग में येह हक़ीक़त रौशन है कि इंसान बलन्दियों के सफ़र में इतना तेज़ गाम है जिससे अ़क़्ल हैरान है ताहम उसे किसी पैमाने से उस सफ़र की पैमाइश के बग़ैर उसके पास दूसरा कोई चारा नहीं है और येह आदमे ख़ाकी चाहे जितनी उड़ान भरे उसके हुदूद का पैमाना उसके सामने रहता है उसे ला मुतनाही के ज़िक्र में नहीं लाया जा सकता। अभी तो सिर्फ़ बलन्दियों का नाम देकर इंसान की पस्तियों की पैमाइश हो रही है। वह नहीं जानता येह रसीदगी नक़्शे पाए साहेबे मेअ़राज मुहम्मद सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से कितना पस्त है जहाँ आँहज़रत का ज़िक्र हो रहा है वहाँ उन बलन्दियों का शुमार पस्तियों में हो रहा हैं वहाँ येह बलन्दियाँ कहीं शुमार व क़तार में नहीं आती हैं।

कितना सच्चा है हमारा क़ुरआन, कैसी अ़ज़मतो बुज़ुर्गी है इस किताबे मजीद की। कौन है जो तारीफ़ में इस फ़ुरक़ाने हमीद के अपनी ज़बान खोले। चौदह सदियों से ज़्यादा गुज़र गए येह किताब बाग़ी इंसानों की फ़ितरत की आईनादारी कर रही है। कई जगह क़ुरआने करीम ने आगही दी है कि अपनी इ़ल्मी इर्तेक़ा पर मग़रूर न हो सबको येह ज़मीन खा जाएगी। अ़ज़मतें और रफ़अतें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला और उसके रसूल और उसकी आल के लिए हैं और मोमेनीन व सालेहीन के लिए हैं। और आख़िर में येह लिख कर क़ुदरत ने क़लम रख दिया।

व रफ़अ़ना लका ज़िकरक

और हमने आप के ज़िक्र को आपके लिए बलन्द किया।

यानी आप के ज़िक्र को वोह रफ़अतें बख़्शी हैं। उसको वोह औज दिया है जो आँ हज़रत के शायाने शान है। आप (स.अ.) के ज़िक्र को ख़ुदा वन्द मुतआ़ल ने वोह रुत्बा अ़ता फ़र्माया है जो अ़र्शे आशियाँ है। जब क़ुरआन मजीद की एक आयत के मुक़ाबिल में जिन्नो इंस मिलकर भी उसकी मिसाल नहीं ला सकते तो ज़िक्रे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की रफ़अ़त व बलन्दी का कौन मुशाहेदा कर सकता है। इन रफ़अ़तों की चन्द जल्वा रेज़ियों और ज़ेया पाशियों की झलक क़ुदरत ने अपने दावा की इसबात में अता फ़र्माई हैं। इस दुनिया का वोह कौन सा गोशा है जहाँ आवाज़े अज़ाँ नहीं गूँज रही है? मश्रेक़ैन व मग़रेबैन का कौन सा वक़्त का ऐसा लम्हा है जिसके मेहराब से नग़मए शहादतैन की दिल नशीन लै वादिए समाअ़त में नहीं बिखर रही है। अल्लाह तअ़ाला ने अपने ज़िक्र के साथ अपने हबीब का ज़िक्र ऐसा पेवस्त कर दिया है कि नमाज़ बग़ैर शहादतैन नमाज़ नहीं होगी। चुनांचे सारे आ़लम में जाने इ़बादत ज़िक्रे ख़ुदा है और ज़िक्रे ख़ुदा ज़िक्रे हबीबे ख़ुदा के साथ साथ ऐसा मुंसलिक है कि उसके बग़ैर इ़बादत का कोई तसव्वुर ही पैदा नहीं होता।

ऐ! व रफ़अ़ना लक ज़िकरक! आयते क़ुरआनी के ममदूह, ऐ साहबे मेअ़राज, ऐ काबा क़ौसैन की मान्ज़िलों से गुज़रने वाले, ऐ वोह कि जिसका ज़िक्र अर्ज़ो समा से लेकर बलंदियों की इंतेहा में गूँज रहा है और ख़ुदा वन्द मुतआ़ल की ज़ाते लामुतनाही जिस ज़िक्र को रफ़अ़तें और बलन्दियाँ बख़्श रहा है।

बाक़ी सफ़हा न. ३३ पर